

Bihar Board Class 12 Music Set B 2023 Question Paper with Solutions

Time Allowed :3 Hours 15 Minutes

Maximum Marks :100

Total Questions :100+6 = 106

सामान्य निर्देश

1. परीक्षार्थी OMR उत्तर पत्रक पर अपना प्रश्न पुस्तिका क्रमांक (10 अंकों का) अवश्य लिखें ।
2. परीक्षार्थी यथासंभव अपने शब्दों में ही उत्तर दें ।
3. दाहिनी ओर हाशिये पर दिये हुए अंक पूर्णांक निर्दिष्ट करते हैं ।
4. प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़ने के लिए परीक्षार्थियों को 15 मिनट का अतिरिक्त समय दिया गया है ।
5. यह प्रश्न पुस्तिका दो खण्डों में है खण्ड-अ एवं खण्ड-ब
6. खण्ड-अ में 100 वस्तुनिष्ठ प्रश्न हैं, जिनमें से किन्हीं 50 प्रश्नों का उत्तर देना अनिवार्य है । पचास से अधिक प्रश्नों के उत्तर देने पर प्रथम 50 उत्तरों का ही मूल्यांकन किया जाएगा । प्रत्येक प्रश्न के लिए 1 अंक निर्धारित है । सही उत्तर को उपलब्ध कराये गये OMR उत्तर पत्रक में दिये गये सही विकल्प की नीले / काले बॉल पेन से प्रगाढ़ करें । किसी भी प्रकार के वाइटनर / तरल पदार्थ / ब्लेड / नाखून आदि का OMR उत्तर पुस्तिका में प्रयोग करना मना है, अन्यथा परीक्षा परिणाम अमान्य होगा ।
7. खण्ड - ब में 6 विषयनिष्ठ प्रश्न हैं ।
8. किसी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरण का प्रयोग पूर्णतया वर्जित है ।

1. ताल में निःशब्द क्रिया कौन-सी है ?

- (a) सम
- (b) ताली
- (c) खाली
- (d) इनमें से कोई नहीं

Correct Answer : (c) खाली

Solution :

स्पष्टीकरण : ताल की संरचना में 'खाली' को निःशब्द (मूक) क्रिया माना जाता है। जब ताली नहीं बजाई जाती, परन्तु एक विशिष्ट अवस्थान पर ताल का संकेत किया जाता है, तो वह 'खाली' कहलाता है। इस क्रिया में हाथ से कोई आवाज़ उत्पन्न नहीं होती, अतः इसे निःशब्द क्रिया कहते हैं।

Quick Tip

ताल की परिभाषा और अंगों को याद रखें — जैसे ताली, सम, और खाली। 'खाली' वह स्थान होता है जहाँ कोई ध्वनि नहीं होती, परन्तु ताल का संकेत आवश्यक होता है।

2. 'क्रमिक पुस्तक मालिका' के लेखक कौन हैं ?

- (a) भातखण्डे
- (b) अहोबल
- (c) पलुस्कर
- (d) भरत

Correct Answer : (a) भातखण्डे

Solution :**स्पष्टीकरण :**

'क्रमिक पुस्तकमालिका' के लेखक पंडित विष्णु नारायण भातखण्डे हैं। यह मालिका हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के सिद्धांतों और अभ्यास की एक महत्वपूर्ण श्रृंखला है, जो विद्यार्थियों को व्यवस्थित रूप में संगीत सिखाने हेतु तैयार की गई थी। पंडित भातखण्डे, जो स्वयं एक महान संगीतज्ञ और शिक्षाविद् थे, ने भारतीय संगीत को उसकी गहरी जड़ों से जोड़ा और इसे एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया।

उनका उद्देश्य भारतीय संगीत की विधियों और रचनाओं को एक सुसंगत प्रणाली के तहत प्रस्तुत करना था, ताकि विद्यार्थियों को शास्त्रीय संगीत का अभ्यास और शिक्षा सरलता से हो सके। 'क्रमिक पुस्तकमालिका' के अंतर्गत, पंडित भातखण्डे ने रागों, तालों, स्वर, और संगीत के अन्य तत्वों को क्रमबद्ध तरीके से प्रस्तुत किया। यह पुस्तकमालिका न केवल संगीत के सिद्धांतों को स्पष्ट करती है, बल्कि इसके अभ्यास के लिए आवश्यक तकनीकी दृष्टिकोण को भी उजागर करती है।

पंडित भातखण्डे के योगदान को संगीत के क्षेत्र में एक नवचेतना के रूप में देखा जाता है। उन्होंने भारतीय संगीत की परंपराओं को संरक्षित किया और उन्हें एक व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया। उनकी पुस्तकों का भारतीय संगीत शिक्षा पर गहरा प्रभाव पड़ा, क्योंकि

वे न केवल शास्त्रीय संगीत के सिद्धांतों को समझाते थे, बल्कि संगीत की शिक्षा में अनुशासन, ध्यान और नियमित अभ्यास की आवश्यकता को भी प्रमुख रूप से उजागर करते थे ।

'क्रमिक पुस्तकमालिका' ने भारतीय संगीत को एक सशक्त आधार दिया और इसे एक शिक्षा के रूप में स्थापित किया । यह किताब शास्त्रीय संगीत के शौकीनों और विद्यार्थियों के लिए एक अमूल्य धरोहर बन गई है । इसके माध्यम से पंडित भातखण्डे ने संगीत को एक ऐसी पद्धति से प्रस्तुत किया, जिससे संगीत को न केवल समझा जा सकता है, बल्कि उसे अभ्यास और प्रदर्शन में भी अपनाया जा सकता है ।

Quick Tip

पंडित भातखण्डे ने भारतीय शास्त्रीय संगीत के शिक्षण को व्यवस्थित करने के लिए कई पुस्तकें लिखीं, जिनमें 'क्रमिक पुस्तकमालिका' प्रमुख है ।

3. डॉ. एन. राजम कौन-सा वाद्य बजाती हैं ?

- (a) सरोद
- (b) सितार
- (c) संतूर
- (d) वायलिन

Correct Answer : (d) वायलिन

Solution :

स्पष्टीकरण :

डॉ. एन. राजम हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की एक प्रमुख और प्रसिद्ध वायलिन वादक हैं । वे भारतीय शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में अपने अनूठे योगदान के लिए जानी जाती हैं । डॉ. राजम ने वायलिन को 'गायकी अंग' शैली में प्रस्तुत करने का अद्वितीय प्रयास किया ।

'गायकी अंग' शैली, जिसमें संगीत को गायन की तरह प्रस्तुत किया जाता है, भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक महत्वपूर्ण पहलू है । गायकी अंग में संगीत के स्वर और लय को उस तरीके से प्रस्तुत किया जाता है जैसे वह गायन में होता है, न कि केवल वाद्य के रूप में । डॉ. राजम ने इस शैली को वायलिन पर साकार किया, जिससे वायलिन का प्रभाव और ध्वनि गायन के समान हो गई, और यह शास्त्रीय संगीत में एक नया मुकाम बन गया ।

इस प्रकार, डॉ. एन. राजम ने वायलिन को शास्त्रीय संगीत के एक महत्वपूर्ण वाद्य के रूप में प्रस्तुत कर उसे भारतीय संगीत में एक नया स्थान दिलाया । उन्होंने न केवल भारतीय शास्त्रीय संगीत को

पश्चिमी वाद्ययंत्र वायलिन के माध्यम से एक नया रूप दिया, बल्कि अपनी अनोखी शैली और तकनीक के द्वारा इस वाद्य को भारतीय शास्त्रीय संगीत में एक नया रंग और समृद्धि भी दी ।

उनकी विशिष्टता यह रही कि उन्होंने वायलिन के माध्यम से रागों की बारीकियों और भावनाओं को उस विशिष्टता के साथ व्यक्त किया जैसे वे गायन में व्यक्त होते हैं । उनके योगदान को भारतीय संगीत जगत में गहरे सम्मान से देखा जाता है, और वे वायलिन के क्षेत्र में एक अग्रणी और प्रेरणास्त्रोत वादक मानी जाती हैं ।

Quick Tip

डॉ. एन. राजम को 'वायलिन की रानी' भी कहा जाता है । उनकी शैली में वायलिन से मानो मानव स्वर जैसा अनुभव होता है ।

4. राग देश का वादी-सम्वादी क्या है ?

- (a) ग-नि
- (b) रे-प
- (c) म-ध
- (d) नि-प

Correct Answer : (b) रे-प

Solution :

स्पष्टीकरण :

राग देश एक प्रमुख और प्रसिद्ध राग है जो भारतीय शास्त्रीय संगीत में विशेष स्थान रखता है । यह राग खमाज थाट पर आधारित होता है और इसकी प्रस्तुति आमतौर पर रात के समय की जाती है । राग देश के वादी स्वर 'रे' (ऋषभ) और सम्वादी स्वर 'प' (पंचम) होते हैं, जो इसके संगीतात्मक संरचना का मुख्य आधार हैं ।

इस राग में 'रे' (ऋषभ) स्वर का उपयोग अत्यधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि यह राग के स्वर-मेलोडी को स्थिरता प्रदान करता है और राग की भावनात्मक गहराई को व्यक्त करता है । वहीं, 'प' (पंचम) स्वर राग के सम्वादी स्वर के रूप में कार्य करता है, जो राग की मधुरता और आकर्षण को बढ़ाता है । इन दो स्वरों का संयोजन राग के संगीतात्मक अनुभव को संपूर्णता प्रदान करता है ।

राग देश की भाव-प्रस्तुति में विशेष रूप से देशभक्ति और उल्लास की भावना होती है । इसे सुनते समय एक प्रकार का उत्साह और राष्ट्रीय गौरव का अनुभव होता है, जो श्रोताओं को भारतीय संस्कृति और

समृद्ध इतिहास के प्रति गर्व से भर देता है। राग के स्वर और लय इस प्रकार से सुसंगत होते हैं कि वे शांति, आनंद और उल्लास का माहौल उत्पन्न करते हैं।

राग देश के गायक और वादक इसे रात के समय प्रस्तुत करते हैं, क्योंकि यह समय राग की भावनाओं और प्रभाव को सही प्रकार से व्यक्त करने के लिए उपयुक्त माना जाता है। राग देश का समग्र प्रभाव श्रोताओं पर गहरा और सकारात्मक पड़ता है, और यह राग भारतीय संगीत में अपनी विशिष्टता और प्रभाव के लिए प्रसिद्ध है।

Quick Tip

वादी-सम्वादी स्वर राग की आत्मा होते हैं। वादी सबसे प्रमुख स्वर होता है और सम्वादी उससे संगत प्रमुख स्वर होता है — दोनों के ज्ञान से राग की पहचान आसान होती है।

5. चारताल में कितने विभाग हैं ?

- (a) 4
- (b) 5
- (c) 6
- (d) 7

Correct Answer : (c) 6

Solution :

स्पष्टीकरण :

चारताल एक 12 मात्राओं की ताल है, जिसे आमतौर पर ध्रुपद संगीत में प्रयोग किया जाता है। यह ताल भारतीय शास्त्रीय संगीत की महत्वपूर्ण तालों में से एक है। चारताल में कुल 6 विभाग होते हैं, और प्रत्येक विभाग में 2 मात्राएँ होती हैं। इस प्रकार, चारताल की कुल संरचना 12 मात्राओं की होती है।

चारताल की विशेषता यह है कि इसकी संरचना ताली और खाली (खाली के रूप में "लय" या "वक्त" का अनुभव होता है) के क्रम में होती है। इसमें ताली की स्थिति प्रत्येक विभाग के अंत में होती है, और खाली प्रत्येक विभाग के बीच में होता है। ताली और खाली का यह स्वरूप चारताल को एक विशिष्ट लयबद्धता और गतिशीलता प्रदान करता है, जिससे इसका अनुभव और भी आकर्षक बनता है।

ध्रुपद संगीत में, चारताल का प्रयोग रागों की प्रस्तुति में बहुत महत्वपूर्ण होता है। यह ताल राग के स्वर और लय को अच्छी तरह से सुसंगत बनाता है और संगीत के प्रत्येक क्षण को महत्वपूर्ण बनाता है।

इसके अतिरिक्त, चारताल के द्वारा गायक और वादक एक विशेष तालबद्धता और अनुशासन का पालन करते हुए संगीत की प्रस्तुति करते हैं ।

इस प्रकार, चारताल केवल एक ताल नहीं, बल्कि एक लयात्मक संरचना है, जो शास्त्रीय संगीत में गहरे प्रभाव और ताजगी का संचार करती है ।

Quick Tip

ताल की पहचान उसके मात्राओं और विभागों की संख्या से होती है । चारताल के 6 विभागों को सही से समझना ताल के प्रदर्शन के लिए आवश्यक है ।

6. राग केदार का थाट क्या है ?

- (a) कल्याण
- (b) काफी
- (c) खमाज
- (d) भैरवी

Correct Answer : (a) कल्याण

Solution :

स्पष्टीकरण :

राग केदार का थाट 'कल्याण' है । राग केदार में तीव्र मध्यम का प्रयोग होता है, जो इसे कल्याण थाट से संबंधित करता है । 'कल्याण' थाट के अंतर्गत आने वाले रागों में तीव्र मध्यम का प्रयोग विशेष रूप से किया जाता है, जो राग को एक हल्की, गंभीर और समृद्ध ध्वनि प्रदान करता है ।

राग केदार शांत रस प्रधान राग है । इसके स्वर और लय के माध्यम से शांति, स्थिरता, और ध्यान की भावना उत्पन्न होती है । राग केदार का संगीत मन को शांति और संतुलन प्रदान करता है, और यह श्रोता को आत्मनिरीक्षण और मानसिक शांति की ओर मार्गदर्शन करता है ।

राग केदार को विशेष रूप से रात्रि के समय गाया जाता है । रात्रि का समय राग केदार के शांत और गहरे भावनात्मक प्रभाव को अधिक प्रभावी रूप से व्यक्त करने के लिए उपयुक्त होता है । रात्रि में इसकी धीमी, गहरी ध्वनियाँ और भावनाएँ श्रोता पर गहरा असर डालती हैं, जिससे राग का संगीत अपनी पूरी गहराई में महसूस होता है ।

इस प्रकार, राग केदार एक अद्वितीय राग है जो शांति और ताजगी का अनुभव कराता है, और इसका संगीत रात्रि के वातावरण में और भी अधिक समृद्ध हो जाता है ।

Quick Tip

थाट प्रणाली का ज्ञान रागों की श्रेणीकरण के लिए आवश्यक है। राग केदार का थाट 'कल्याण' है क्योंकि इसमें तीव्र मध्यम का प्रयोग प्रमुखता से होता है।

7. ताल तिलवाड़ा में कितनी मात्राएँ होती हैं ?

- (a) 10
- (b) 12
- (c) 14
- (d) 16

Correct Answer : (d) 16

Solution :

स्पष्टीकरण :

ताल तिलवाड़ा एक 16 मात्राओं की ताल है, जिसका प्रयोग विशेषकर खयाल गायन में मंद (धीमी) गति के लिए किया जाता है। यह ताल खयाल गायन की शास्त्रीय रचनाओं में विशेष रूप से उपयोगी है, क्योंकि इसकी धीमी गति में रागों की गहरी भावनाओं और नयनों को अभिव्यक्त किया जा सकता है। ताल तिलवाड़ा की संरचना चार भागों (विभागों) में विभाजित होती है, जिसमें प्रत्येक विभाग में चार मात्राएँ होती हैं। इसके प्रत्येक विभाग को सुनियोजित तरीके से प्रस्तुत किया जाता है ताकि लय और ताल का संतुलन बना रहे। इसकी ताली-खाली की व्यवस्था इस प्रकार होती है :

ताली 1 (सम), ताली 5, खाली 9, ताली 13।

यह ताली-खाली की व्यवस्था ताल की लयबद्धता को बनाए रखती है और इसके अनुशासन को बढ़ाती है। सम (ताली 1) से लेकर ताली 13 तक की योजना ताल के धारा को सुनियोजित करती है, और प्रत्येक खली के साथ वह ताल का प्रभाव और अधिक स्पष्ट होता है।

ताल तिलवाड़ा का प्रयोग विशेष रूप से धीमे गति के खयाल गायन में किया जाता है, जहाँ गायक या वादक राग के भावनात्मक पहलुओं को गहराई से प्रस्तुत करते हैं। यह ताल संगीत की गति और रूप को संरक्षित रखते हुए उसकी सुंदरता को और भी बढ़ाता है।

Quick Tip

16 मात्राओं की कई तालें होती हैं, जैसे—तिंताल और तिलवाड़ा। परंतु तिलवाड़ा का उपयोग विशेष रूप से खयाल गायन की विलंबित लय में होता है।

8. हिन्दुस्तानी संगीत में कितने थाट हैं ?

- (a) 8
- (b) 10
- (c) 12
- (d) 6

Correct Answer : (b) 10

Solution :

स्पष्टीकरण :

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के प्रमुख सैद्धांतिक ग्रंथकार पंडित विष्णु नारायण भातखण्डे ने कुल 10 थाटों का वर्गीकरण प्रस्तुत किया। पंडित भातखण्डे का यह योगदान भारतीय संगीत में एक मील का पत्थर माना जाता है, क्योंकि उन्होंने संगीत के सिद्धांतों को व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत किया और भारतीय शास्त्रीय संगीत की जटिल संरचनाओं को सरल किया।

यह 10 थाट विभिन्न रागों के आधार होते हैं और इनका वर्गीकरण रागों की संरचना को समझने में सहायक है। प्रत्येक थाट में विशिष्ट स्वरों का उपयोग किया जाता है, जो रागों को विभिन्न भावनाओं और गुणों के साथ जोड़ते हैं। पंडित भातखण्डे के अनुसार, थाट केवल एक लय या स्वर नहीं, बल्कि पूरे राग की संरचना का आधार होता है, जो राग के भाव और रंग को व्यक्त करता है।

भातखण्डे का यह वर्गीकरण संगीत के छात्रों और शास्त्रीय संगीतज्ञों के लिए अत्यंत उपयोगी है, क्योंकि इससे रागों को समझने और उन्हें सही ढंग से प्रस्तुत करने में मदद मिलती है। उनके द्वारा प्रस्तुत यह थाट प्रणाली आज भी भारतीय शास्त्रीय संगीत में एक महत्वपूर्ण संदर्भ के रूप में कार्य करती है।

उनके द्वारा किए गए इस वर्गीकरण से संगीत के अध्ययन में एक नई दिशा खुली और शास्त्रीय संगीत की शिक्षा को व्यवस्थित करने में एक मील का पत्थर साबित हुआ।

Quick Tip

भातखण्डे के अनुसार 10 थाट हैं जो संगीत रचना का आधार हैं। थाट प्रणाली से रागों की पहचान और वर्गीकरण संभव होता है।

9. तीव्र म का प्रयोग किस राग में होता है ?

- (a) यमन
- (b) काफी
- (c) बिहाग
- (d) भूपाली

Correct Answer : (a) यमन

Solution :

स्पष्टीकरण :

राग यमन में तीव्र मध्यम (तीव्र म) का प्रयोग होता है, जो इसे अन्य रागों से विशिष्ट बनाता है। यह राग कल्याण थाट से संबंधित है, और इसकी संरचना में तीव्र मध्यम की महत्वपूर्ण भूमिका है। तीव्र मध्यम का प्रयोग राग यमन को एक विशिष्ट और गंभीर ध्वनि प्रदान करता है, जो इसके भावनात्मक प्रभाव को बढ़ाता है।

राग यमन मुख्य रूप से संध्या समय (शाम के समय) गाया जाता है, क्योंकि यह समय राग की भावनाओं को पूर्ण रूप से व्यक्त करने के लिए उपयुक्त होता है। संध्या के समय वातावरण में जो शांति और गंभीरता होती है, वह राग यमन के स्वर और लय के साथ पूरी तरह से मेल खाती है।

तीव्र मध्यम का प्रयोग राग यमन के स्वरूप को एक विशेष दिशा में ले जाता है, जिससे यह राग अन्य रागों से अलग पहचान बनाता है। इसकी प्रस्तुति में विशेष रूप से संयम, धैर्य, और एक गहरी भावनात्मकता की आवश्यकता होती है। राग यमन का यह रूप श्रोताओं पर गहरा प्रभाव डालता है, और इसे सुनते समय एक प्रकार की आध्यात्मिक शांति और मानसिक संतुलन का अनुभव होता है। इस प्रकार, राग यमन की संरचना, तीव्र मध्यम के प्रयोग और संध्या समय में इसके गायन की विशेषताएँ इसे एक अद्वितीय और प्रभावशाली राग बनाती हैं।

Quick Tip

राग यमन के स्वरूप में तीव्र मध्यम प्रमुख है। तीव्र म का सही प्रयोग राग की पहचान के लिए महत्वपूर्ण होता है।

10. रूपक ताल में कितनी मात्राएँ होती हैं ?

- (a) 7
- (b) 6
- (c) 5
- (d) 4

Correct Answer : (b) 6

Solution :

स्पष्टीकरण :

रूपक ताल में कुल 6 मात्राएँ होती हैं। इसे तीन विभागों में बाँटा जाता है, और प्रत्येक विभाग में दो मात्राएँ होती हैं। रूपक ताल की ताली-खाली की व्यवस्था इस प्रकार होती है : ताली (1), खाली (4), ताली (6)।

इस ताल की संरचना में ताली और खाली के स्थानों को बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। ताली (1) और ताली (6) पर होते हुए, खली (4) ताल की लयबद्धता और गतिशीलता को बढ़ाता है। इसका प्रभाव संगीत में संतुलन और संरचना का एक अद्वितीय तत्व जोड़ता है।

रूपक ताल आमतौर पर मध्यम गति के संगीत में प्रयोग की जाती है। यह ताल विशेष रूप से गायक और वादक द्वारा धीमे और मध्यम रचनाओं में उपयोग की जाती है, क्योंकि इसकी लय और गति दोनों संगीत को शांत, गंभीर और व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत करते हैं।

इस ताल का प्रयोग विभिन्न प्रकार की संगीत रचनाओं में किया जाता है, और यह शास्त्रीय संगीत के अध्ययन में एक महत्वपूर्ण ताल है। रूपक ताल की लयबद्धता और संरचना इसके संगीत में आकर्षक और सुंदर प्रभाव पैदा करती है।

Quick Tip

तालों के मात्राओं और विभागों की संख्या जानना जरूरी है। रूपक ताल की 6 मात्राएँ इसे विशिष्ट बनाती हैं।

11. राग बिलावल का गायन समय क्या है ?

- (a) सायंकाल
- (b) प्रातःकाल
- (c) दोपहर
- (d) रात्रि

Correct Answer : (c) दोपहर

Solution :

स्पष्टीकरण :

राग बिलावल का गायन मुख्यतः दोपहर के समय किया जाता है, क्योंकि यह समय राग के भाव और स्वरूप को सर्वोत्तम रूप से व्यक्त करने के लिए उपयुक्त होता है। राग बिलावल बिलावल थाट पर आधारित है, और इसका स्वरूप शांति, संतुलन और प्रसन्नता का प्रतीक होता है।

राग बिलावल का संगीत हृदय को प्रसन्न करने वाला होता है और इसके भावों में सकारात्मकता और आनंद की भावना प्रकट होती है। यह राग श्रोताओं को मानसिक शांति और आनंद प्रदान करता है, और इसकी ध्वनियाँ वातावरण में एक सुखद और ताजगी से भरपूर अनुभव उत्पन्न करती हैं।

बिलावल थाट के अंतर्गत आने वाले रागों का स्वरूप सामान्यतः हल्का, सुखद और साफ होता है, और राग बिलावल इस थाट का आदर्श उदाहरण है। इस राग में स्वर संयमित होते हैं, जिससे इसकी प्रस्तुति में एक सुखद लय और हल्की-फुल्की ऊर्जा का अहसास होता है।

इस प्रकार, राग बिलावल का गायन विशेष रूप से दोपहर के समय किया जाता है, और यह राग शांत एवं प्रसन्नता प्रदर्शित करता है, जिससे श्रोताओं में ताजगी और आनंद का संचार होता है।

Quick Tip

रागों के गायन समय को याद रखना आवश्यक है, क्योंकि इससे उनका भावपूर्ण प्रदर्शन संभव होता है। बिलावल राग दोपहर का प्रमुख राग है।

12. किसी भी ताल की पहली मात्रा कहलाती है।

- (a) खाली
- (b) ताली
- (c) सम
- (d) विभाग

Correct Answer : (c) सम

Solution :

स्पष्टीकरण :

किसी भी ताल की पहली मात्रा को 'सम' कहा जाता है। सम वह बिंदु है जहाँ ताल की शुरुआत होती है और इसे ताल का प्रमुख बिंदु माना जाता है। सम पर ताली बजती है, जो ताल की लयबद्धता और संरचना को स्थिर करती है।

सम पर ताली बजने से पूरे ताल की गिनती का आभास होता है, और सभी अन्य मात्राएँ इसी सम के सापेक्ष गिनी जाती हैं। अन्य मात्राएँ या तो ताली (जो ताल के विशेष बिंदुओं पर बजती हैं) या खली (जो कुछ अंतराल पर होती हैं) के रूप में आती हैं, लेकिन सम हमेशा ताल का केंद्रीय बिंदु होता है।

सम की पहचान और इसका सही प्रयोग ताल की मूल संरचना और लय के संचालन में अत्यंत महत्वपूर्ण है। बिना सम के, ताल का संतुलन टूट सकता है और उसकी धारा खो सकती है। इसलिए, सम किसी भी ताल का आधार और दिशा-निर्देश होता है, जो शास्त्रीय संगीत की लयबद्धता को बनाए रखने में सहायक होता है।

Quick Tip

ताल की संरचना में 'सम' का महत्व बहुत अधिक है क्योंकि यह ताल का केंद्र बिंदु होता है और सभी संगीतकार इसी के आधार पर ताल का पालन करते हैं।

13. तबले में चमड़े से मढ़ा हुआ भाग क्या कहलाता है ?

- (a) स्याही
- (b) मैदान
- (c) चाँटी
- (d) पुरी

Correct Answer : (b) मैदान

Solution :

स्पष्टीकरण :

तबले में चमड़े से मढ़ा हुआ मुख्य भाग 'मैदान' कहलाता है। यह तबले की त्वचा होती है जिस पर हाथों से ताल बजाई जाती है। मैदान तबले का सबसे महत्वपूर्ण भाग है, क्योंकि यह ताल के सभी ध्वनियों और प्रतिध्वनियों को उत्पन्न करता है।

मैदान की गुणवत्ता तबले की आवाज़ में अहम भूमिका निभाती है। यदि मैदान का चमड़ा उच्च गुणवत्ता का होता है, तो तबले की आवाज़ स्पष्ट, शुद्ध और मधुर होती है। इसके विपरीत, यदि मैदान की गुणवत्ता अच्छी नहीं होती है, तो तबले की ध्वनि मद्धम, बेस्वाद या गलत हो सकती है।

इस प्रकार, तबले के मैदान का निर्माण और उसकी सामग्री की गुणवत्ता शास्त्रीय संगीत में तबले की प्रभावशीलता और उसका उपयोग करने के तरीके को प्रभावित करती है। यह तबले की आवाज़ और उसकी संगीतमयता को स्थिर और संपूर्ण बनाए रखने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

Quick Tip

तबले के अंगों को पहचानना महत्वपूर्ण है — मैदान तबले का प्रमुख भाग है जहाँ ध्वनि उत्पन्न होती है ।

14. राग भैरव का गायन समय क्या है ?

- (a) प्रातःकाल
- (b) दिन का दूसरा प्रहर
- (c) सायंकाल
- (d) रात्रिकाल

Correct Answer : (b) दिन का दूसरा प्रहर

Solution :

स्पष्टीकरण :

राग भैरव का गायन मुख्यतः प्रातःकाल के दूसरे प्रहर (सुबह 9 बजे से 12 बजे तक) किया जाता है । यह समय राग भैरव के भाव और स्वरूप को सही तरीके से व्यक्त करने के लिए उपयुक्त माना जाता है, क्योंकि प्रातःकाल का समय शांति, गंभीरता और ऊर्जा से भरपूर होता है ।

राग भैरव गंभीर और भक्ति भाव से युक्त होता है । इसके संगीत में एक प्रकार की गंभीरता और श्रद्धा का अहसास होता है, जो श्रोताओं को आध्यात्मिक रूप से प्रभावित करता है । राग भैरव के स्वर उसकी गहरी और भक्ति-प्रेरित भावनाओं को व्यक्त करते हैं, और इसका गायन शांति, संतुलन और भक्ति की भावना को उत्पन्न करता है ।

इस राग का मुख्य उद्देश्य श्रोताओं को मानसिक और आत्मिक शांति प्रदान करना होता है । यह राग आमतौर पर ध्यान और साधना के समय गाया जाता है, क्योंकि इसका भावनात्मक और आध्यात्मिक प्रभाव अत्यधिक गहरा होता है ।

इस प्रकार, राग भैरव का गायन प्रातःकाल के दूसरे प्रहर में किया जाता है, और यह एक गंभीर, भक्ति-युक्त और शांति प्रदान करने वाला राग है ।

Quick Tip

राग भैरव का समय प्रातःकाल का दूसरा प्रहर है, इसलिए इसे प्रातःकालीन राग भी कहा जाता है ।

15. औडव-संपूर्ण जाति के किसी राग के आरोह में कितने स्वर होते हैं ?

- (a) 5
- (b) 6
- (c) 7
- (d) 12

Correct Answer : (b) 6

Solution :

स्पष्टीकरण :

औडव-संपूर्ण जाति के रागों में आरोह (चढ़ाव) में 6 स्वर होते हैं, जबकि अवरोह (उतराव) में सम्पूर्ण 7 स्वर होते हैं। यह रागों की स्वर-रचना को दर्शाता है, और यह रागों की संरचना में एक विशिष्ट विशेषता है।

औडव-संपूर्ण जाति के रागों का आरोह और अवरोह में भिन्नता राग के संगीत में विशिष्टता और गति-शीलता प्रदान करती है। आरोह में 6 स्वर होते हैं, जिससे राग में एक सीमित और संक्षिप्त चढ़ाव होता है, जो राग के स्वर के शुरुआत को नियंत्रित करता है। वहीं, अवरोह में 7 स्वर होने से राग में उतरते समय एक पूर्ण और व्यापक स्वर-धारा होती है, जो राग को गहरी और संतुलित ध्वनि प्रदान करती है।

यह संरचना राग के भाव और प्रभाव को विशेष रूप से आकार देती है। आरोह और अवरोह के इन भिन्न स्वरों के कारण राग में उन्नति और अवनति के बीच एक संतुलन और लयात्मकता होती है, जो शास्त्रीय संगीत की धारा को और भी प्रभावी बनाती है।

इस प्रकार, औडव-संपूर्ण जाति के रागों की स्वर-रचना आरोह में 6 और अवरोह में 7 स्वरों के विशिष्ट संतुलन को दर्शाती है, जो राग के भाव, भावना और संगीतमयता को बढ़ाता है।

Quick Tip

राग की जाति उसके आरोह और अवरोह में प्रयुक्त स्वरों की संख्या से निर्धारित होती है। औडव-संपूर्ण में आरोह में 6 स्वर होते हैं।

16. राग भूपाली किस जाति का राग है ?

- (a) सम्पूर्ण
- (b) षाडव

(c) औडव

(d) औडव-सम्पूर्ण

Correct Answer : (a) सम्पूर्ण

Solution :

स्पष्टीकरण :

राग भूपाली सम्पूर्ण जाति का राग है, जिसमें आरोह और अवरोह दोनों में 5 स्वर होते हैं। यह राग एक सरल, सहज, और अत्यंत लोकप्रिय राग माना जाता है, जो शास्त्रीय संगीत के श्रोताओं के बीच बहुत प्रिय है।

राग भूपाली का आरोह और अवरोह दोनों में 5 स्वर होने के कारण इसका स्वरूप संतुलित और सुसंगत होता है। इसका आरोह (चढ़ाव) और अवरोह (उतराव) दोनों ही राग को हल्के, शुद्ध और प्रभावशाली स्वर प्रदान करते हैं, जो इसे एक बहुत ही सरल और आमतौर पर गाया जाने वाला राग बनाता है।

राग भूपाली को शास्त्रीय संगीत में एक शांत और सजीव राग माना जाता है, जो श्रोताओं को मानसिक शांति और सौम्यता का अनुभव कराता है। यह राग विशेष रूप से देर शाम या रात्रि के प्रारंभ में गाया जाता है, क्योंकि इसके स्वर रात्रि के वातावरण में अच्छी तरह से घुल मिल जाते हैं।

इस प्रकार, राग भूपाली सम्पूर्ण जाति का राग है जिसमें आरोह और अवरोह दोनों में 5 स्वर होते हैं और इसे अपनी सरलता और लोकप्रियता के कारण विशेष रूप से पसंद किया जाता है।

Quick Tip

भूपाली राग की जाति को समझना जरूरी है — यह सम्पूर्ण (पूर्ण) जाति का राग है, जिसका मतलब आरोह और अवरोह दोनों में समान स्वर संख्या है।

17. राग काफी का गायन समय क्या है ?

(a) प्रातःकाल

(b) दोपहर

(c) रात्रि का द्वितीय प्रहर

(d) मध्य रात्रि के बाद

Correct Answer : (a) प्रातःकाल

Solution :

स्पष्टीकरण :

राग काफी का गायन मुख्यतः प्रातःकाल (सुबह) किया जाता है। यह समय राग के भाव और स्वरूप को सबसे अच्छे तरीके से व्यक्त करने के लिए उपयुक्त होता है, क्योंकि प्रातःकाल का समय शांति, ताजगी और गंभीरता से भरपूर होता है।

राग काफी भक्ति और गंभीरता से भरपूर होता है। इसके स्वर में एक गहरी भावनात्मकता और समर्पण की भावना होती है, जो श्रोताओं को मानसिक और आध्यात्मिक शांति प्रदान करती है। राग काफी के संगीत में समर्पण, ध्यान, और आस्था के भाव पूरी तरह से प्रकट होते हैं, जो इसे एक प्रभावशाली भक्ति राग बनाता है।

राग काफी का गायन प्रातःकाल में, जब वातावरण में शांति और ठंडक होती है, राग की गंभीरता और भक्ति भावना को और भी अधिक गहराई से महसूस कराया जाता है। इस राग का संगीत श्रोताओं के मन को शांति और संतुलन की ओर ले जाता है।

इस प्रकार, राग काफी का गायन विशेष रूप से प्रातःकाल में किया जाता है, और यह राग भक्ति और गंभीरता से भरपूर होता है, जिससे श्रोताओं में एक आध्यात्मिक और शांति का अनुभव होता है।

Quick Tip

रागों के गायन समय को याद रखना जरूरी है क्योंकि इससे उनकी भावपूर्ण प्रस्तुति सुनिश्चित होती है। काफी राग का समय प्रातःकाल है।

18. गीत के दूसरे भाग को क्या कहते हैं ?

- (a) स्थायी
- (b) अंतरा
- (c) संचारी
- (d) आभोग

Correct Answer : (b) अंतरा

Solution :

स्पष्टीकरण :

गीत का दूसरा भाग 'अंतरा' कहलाता है। यह गीत के मुख्य विषय और भाव को विस्तार देने का कार्य करता है। अंतरा गीत का वह हिस्सा होता है, जिसमें संगीत और शब्दों के द्वारा गीत के भावनात्मक और कथात्मक पक्ष को और गहराई से प्रस्तुत किया जाता है।

गीत का पहला भाग 'स्थायी' होता है, जो गीत की संरचना का आधार और स्थिर हिस्सा होता है। स्थायी

गीत के मुख्य ध्वनि और भाव का परिचायक होता है, जबकि अंतरा गीत के उस भाव को विस्तार देता है और उसे और अधिक गहरे रूप में प्रस्तुत करता है ।

अंतरे के माध्यम से गीत के स्वर, राग, और विषय को एक नई दिशा और गहराई मिलती है, जिससे श्रोताओं पर एक विशेष प्रभाव पड़ता है । यह गीत को विविधता और गतिशीलता प्रदान करता है, और गीत के भावनात्मक प्रभाव को और अधिक तीव्र करता है ।

इस प्रकार, अंतरा गीत के मुख्य भाव को विस्तार देता है और उसे श्रोताओं के लिए और भी अधिक प्रभावी बना देता है ।

Quick Tip

गीत के भागों को समझना आवश्यक है — स्थायी और अंतरा गीत की संरचना के महत्वपूर्ण घटक हैं ।

19. दादरा ताल की ताली किस मात्रा पर है ?

- (a) 1
- (b) 2
- (c) 3
- (d) 6

Correct Answer : (c) 3

Solution :

स्पष्टीकरण :

दादरा ताल में कुल 6 मात्राएँ होती हैं । यह ताल एक लोकप्रिय 6-मात्रीय ताल है, जो विशेष रूप से हल्के संगीत रूपों में प्रयोग किया जाता है । दादरा ताल की ताली तीसरी मात्रा पर होती है, जो इसकी विशेषता है ।

ताली का यह स्थान ताल की लयबद्धता और गतिशीलता को बनाए रखता है । जब ताली तीसरी मात्रा पर बजती है, तो यह ताल के पूरे धारा को संतुलित और गतिशील बनाए रखता है, जिससे संगीत की धारा निरंतर और सुसंगत बनी रहती है ।

दादरा ताल का प्रयोग खासतौर पर भजन, गज़ल, और थुमरी जैसे हल्के संगीत रूपों में किया जाता है, जहाँ इसका हल्का और लयबद्ध प्रभाव गायक और श्रोता दोनों के लिए आनंददायक होता है ।

इस प्रकार, दादरा ताल में 6 मात्राएँ होती हैं और ताली तीसरी मात्रा पर होने से यह ताल संगीत में संतुलन और लय की स्थिरता बनाए रखता है ।

Quick Tip

ताल की ताली और खाली के स्थान याद रखें, क्योंकि ये ताल की पहचान और बजाने में सहायक होते हैं ।

20. पं. सियाराम तिवारी किस शैली के गायक थे ?

- (a) ख्याल
- (b) ध्रुवपद
- (c) लोकगीत
- (d) ठुमरी

Correct Answer : (d) ठुमरी

Solution :

स्पष्टीकरण :

पं. सियाराम तिवारी प्रसिद्ध ठुमरी गायक थे, जिन्होंने ठुमरी शैली में अपनी विशिष्ट आवाज़ और अभिव्यक्ति के लिए विशेष पहचान बनाई । पं. सियाराम तिवारी की गायकी में एक गहरी भावनात्मकता और सूक्ष्मता होती थी, जो उनके गायन को शास्त्रीय और लोक संगीत के बीच एक आदर्श मिलन बनाती थी ।

ठुमरी शैली में, पं. सियाराम तिवारी ने अपनी गायन कला को एक नये आयाम पर पहुँचाया । उनकी गायकी में भावनाओं की गहराई और अभिव्यक्ति की विशिष्टता की झलक मिलती है, जो श्रोताओं को एक अलग मानसिक अवस्था में ले जाती थी ।

पं. तिवारी ने ठुमरी के गायन में जो अनूठी शुद्धता और संवेदनशीलता प्रस्तुत की, वह उन्हें इस शैली में एक उत्कृष्ट कलाकार के रूप में स्थापित करती है । उनकी आवाज़ में एक विशेष प्रकार का मधुरता और लयात्मकता थी, जो ठुमरी के रसपूर्ण स्वरूप को और भी प्रभावी बनाती थी ।

इस प्रकार, पं. सियाराम तिवारी की गायकी ठुमरी शैली के लिए अद्वितीय थी, और उन्होंने अपनी आवाज़ और अभिव्यक्ति से इस कला को एक नई ऊँचाई पर पहुँचाया ।

Quick Tip

शैली के गायक और उनके योगदान को जानना संगीत के इतिहास को समझने में मदद करता है ।
पं. सियाराम तिवारी ठुमरी के प्रमुख कलाकार थे ।

21. झपताल की दूसरी ताली किस मात्रा पर है ?

- (a) 1
- (b) 3
- (c) 7
- (d) 10

Correct Answer : (a) 1

Solution :

स्पष्टीकरण :

झपताल में कुल 10 मात्राएँ होती हैं, जो इसे एक दस मात्राओं का ताल बनाती है। झपताल का प्रयोग मुख्यतः ध्रुपद और खयाल गायन में किया जाता है, जहाँ इसकी लयबद्धता और गहरे प्रभाव का पूरा उपयोग होता है।

झपताल की विशेषता यह है कि इसकी दूसरी ताली पहली मात्रा पर होती है, जिससे ताल की लयबद्धता स्पष्ट होती है। जब ताली पहली मात्रा पर होती है, तो ताल की गिनती और लय को सही दिशा मिलती है, जिससे पूरे ताल का स्वरूप संगठित और व्यवस्थित बनता है। यह विशेषता ताल के प्रति एक स्थिरता और संतुलन प्रदान करती है।

झपताल का यह लय और गहरी संगीतमयता शास्त्रीय संगीत में अत्यधिक प्रभावशाली होती है, और इसे मध्यम गति के रचनाओं में बेहतर ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। इसके व्यावहारिक उपयोग से संगीत में गतिशीलता और स्थिरता का आदान-प्रदान होता है, जिससे श्रोताओं पर एक गहरा प्रभाव पड़ता है।

इस प्रकार, झपताल में 10 मात्राएँ होती हैं, और इसकी दूसरी ताली पहली मात्रा पर होने से ताल की लयबद्धता को मजबूती मिलती है।

Quick Tip

तालों की ताली और खाली की मात्राएँ याद रखें, ये ताल की संरचना को समझने में मदद करती हैं।

22. किस राग में दोनों मध्यम लगते हैं ?

- (a) यमन
- (b) देश

- (c) बिहाग
(d) काफी

Correct Answer : (a) यमन

Solution :

स्पष्टीकरण :

राग यमन में दोनों मध्यम स्वर (शुद्ध म और तीव्र म) का प्रयोग होता है, जो इसे एक विशिष्ट और प्रभावशाली राग बनाता है। राग यमन में शुद्ध मध्यम (म) और तीव्र मध्यम (म') दोनों स्वर होते हैं, और इनका सही स्थान पर उपयोग राग के भाव और प्रभाव को गहरे तरीके से व्यक्त करता है।

शुद्ध मध्यम (म) राग यमन में स्थिरता और शांति का अहसास कराता है, जबकि तीव्र मध्यम (म') इसका स्वरूप और प्रभाव तीव्र बनाता है, जो राग के भाव को और भी जीवंत और गतिशील बनाता है। इस प्रकार, राग यमन में दोनों मध्यम स्वर का संगम इसे एक अद्वितीय और आकर्षक राग बनाता है।

राग यमन का गायन रात्रि के समय किया जाता है, और इसकी संरचना श्रोताओं में एक भावनात्मक संतुलन और गहराई उत्पन्न करती है। राग यमन की ये विशेषताएँ उसे भारतीय शास्त्रीय संगीत में एक महत्वपूर्ण और प्रसिद्ध राग बनाती हैं।

इस प्रकार, राग यमन में शुद्ध और तीव्र मध्यम दोनों स्वरों का प्रयोग होता है, जो इसे अपनी विशिष्टता के लिए जाना जाता है।

Quick Tip

दोनों मध्यम स्वर वाले रागों को पहचानना संगीत की गहन समझ प्रदान करता है। यमन राग में ये दोनों मध्यम पाए जाते हैं।

23. भैरवी राग में कितने स्वर प्रयुक्त होते हैं ?

- (a) 5
(b) 6
(c) 7
(d) 4

Correct Answer : (b) 6

Solution :

स्पष्टीकरण :

राग भैरवी में कुल 6 स्वर प्रयुक्त होते हैं, जो इस राग की विशिष्टता और सुंदरता को दर्शाते हैं। यह राग भारतीय शास्त्रीय संगीत में एक अत्यंत प्रभावशाली और प्रिय राग है, जिसे विशेष रूप से भक्ति और गंभीर भावनाओं के साथ प्रस्तुत किया जाता है।

राग भैरवी में प्रयुक्त स्वर कुछ हद तक प्रकृत स्वरों से भिन्न होते हैं। इसमें ऋषभ (R) और धैवत (D) का स्वर कुछ तद्रूप या परिवर्तित किया जाता है, जिससे इस राग का संगीत एक अलग रंग और भाव उत्पन्न करता है। इस प्रकार, राग भैरवी की स्वर-रचना में इन स्वरों के विशेष उपयोग से राग को एक गहरी और सजीव अभिव्यक्ति मिलती है।

राग भैरवी का गायन आमतौर पर प्रातःकाल किया जाता है, और इसके स्वर शांति, भक्ति, और आत्मिक संतुलन का अहसास कराते हैं। राग के स्वर और इसकी संरचना श्रोताओं को मानसिक शांति और ध्यान की स्थिति में ले जाते हैं, जिससे इसे भारतीय संगीत में एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है।

इस प्रकार, राग भैरवी में 6 स्वर प्रयुक्त होते हैं, और इसके स्वर कुछ प्रकृत स्वरों से भिन्न होते हैं, जो इसे एक विशिष्ट और प्रभावी राग बनाते हैं।

Quick Tip

रागों में प्रयुक्त स्वर संख्या याद रखना महत्वपूर्ण है। भैरवी राग में 6 स्वर होते हैं।

24. 'अभिनव राग मंजरी' पुस्तक के लेखक कौन हैं ?

- (a) पं. पटवर्द्धन
- (b) पं. ओंकार नाथ ठाकुर
- (c) पं. भातखण्डे
- (d) पं. रामाश्रय झा

Correct Answer : (a) पं. पटवर्द्धन

Solution :

स्पष्टीकरण :

'अभिनव राग मंजरी' पुस्तक के लेखक पं. पटवर्द्धन हैं। यह पुस्तक भारतीय संगीत के अध्ययन में एक महत्वपूर्ण कृति मानी जाती है, जो विशेष रूप से रागों की संरचना, उनके भावनात्मक प्रभाव और गायन विधियों पर केंद्रित है।

पं. पटवर्द्धन ने भारतीय शास्त्रीय संगीत के विभिन्न पहलुओं को इस पुस्तक में प्रस्तुत किया है, जिसमें रागों के निर्माण, उनके स्वरूप, और विभिन्न राग-प्रकारों का विश्लेषण किया गया है। 'अभिनव राग मंजरी' संगीतज्ञों, शास्त्रज्ञों और विद्यार्थियों के लिए एक अनमोल स्रोत है, जो भारतीय संगीत के गहरे अध्ययन को सरल और सुलभ बनाता है।

इस पुस्तक में रागों की विस्तृत विवेचना और उनके आंतरिक गुणों की चर्चा की गई है, जो संगीत में रुचि रखने वालों के लिए एक अमूल्य धरोहर साबित होती है।

इस प्रकार, 'अभिनव राग मंजरी' भारतीय संगीत के अध्ययन में एक महत्वपूर्ण पुस्तक मानी जाती है, जिसका लेखन पं. पटवर्द्धन ने किया है।

Quick Tip

भारतीय संगीत के प्रमुख ग्रंथ और उनके लेखक याद रखें, जिससे संगीत का इतिहास समझने में मदद मिलती है।

25. किस राग के आरोह में ऋषभ और धैवत वर्जित हैं ?

- (a) भैरव
- (b) भीमपलासी
- (c) यमन
- (d) देश

Correct Answer : (a) भैरव

Solution :

स्पष्टीकरण :

राग भैरव के आरोह (चढ़ाव) में ऋषभ (Re) और धैवत (Dha) स्वर वर्जित होते हैं, जो इसे एक विशिष्ट राग बनाते हैं। इस राग का आरोह सप्तक के सभी स्वरों से अलग होता है, और इस विशेषता के कारण राग का स्वरूप अत्यंत गंभीर और प्रभावशाली होता है।

राग भैरव में, आरोह के दौरान ऋषभ और धैवत का प्रयोग नहीं होता, जबकि अवरोह (उतराव) में ये स्वरों का प्रयोग सामान्य रूप से किया जाता है। इस प्रकार की स्वर-व्यवस्था राग भैरव को उसके अन्य समकक्ष रागों से अलग करती है और उसे एक गहरे और भक्ति भाव से युक्त राग के रूप में प्रस्तुत करती है।

राग भैरव का गान मुख्यतः प्रातःकाल के समय किया जाता है, और इसके स्वर शांति, गंभीरता और

भक्तिपूर्ण भावना का प्रतिनिधित्व करते हैं। इस राग की यह विशेष स्वर-रचना इसे भारतीय शास्त्रीय संगीत में एक प्रमुख स्थान दिलाती है।

इस प्रकार, राग भैरव के आरोह में ऋषभ (Re) और धैवत (Dha) स्वर वर्जित होते हैं, जो इसे एक विशिष्ट राग बनाते हैं और इसके गायन में विशेष भावनात्मक प्रभाव उत्पन्न करते हैं।

Quick Tip

रागों के आरोह-अवरोह में प्रयुक्त और वर्जित स्वरों को जानना जरूरी है। भैरव में Re और Dha नहीं होते।

26. धमार ताल में खाली किस मात्रा पर है ?

- (a) 6
- (b) 8
- (c) 10
- (d) 12

Correct Answer : (c) 10

Solution :

स्पष्टीकरण :

धमार ताल में कुल 14 मात्राएँ होती हैं, जो इसे एक विस्तृत और जटिल ताल बनाती हैं। यह ताल विशेष रूप से धरुपद गायन और नृत्य में प्रयुक्त होता है, जहाँ इसकी लय और संरचना का पूरा प्रभाव महसूस किया जाता है।

धमार ताल की खाली (जो कि शून्य या निस्तब्धता की स्थिति होती है) 10वीं मात्रा पर पड़ती है। यह व्यवस्था ताल की लय और गतिशीलता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जब खाली 10वीं मात्रा पर होती है, तो यह ताल के संपूर्ण चक्र में एक विशेष संतुलन और व्यावसायिकता बनाए रखती है।

धमार ताल की यह विशेषता इसे शास्त्रीय संगीत में एक प्रतिष्ठित ताल बनाती है। इसके व्यवस्थित ताली और खाली की व्यवस्था श्रोताओं को एक लयबद्ध और समृद्ध अनुभव प्रदान करती है।

इस प्रकार, धमार ताल में कुल 14 मात्राएँ होती हैं और इसकी खाली 10वीं मात्रा पर पड़ती है, जो ताल की लयबद्धता और गहराई को सुनिश्चित करती है।

Quick Tip

ताल की संरचना में खाली और ताली के स्थान जानना ताल की लयबद्धता समझने में मदद करता है ।

27. निम्न में पखावज वादक कौन हैं ?

- (a) पं. रामाशीश पाठक
- (b) पं. रविशंकर
- (c) पं० हरि
- (d) पं. शिवकुमार शर्मा

Correct Answer : (a) पं. रामाशीश पाठक

Solution :

स्पष्टीकरण :

पं. रामाशीश पाठक प्रसिद्ध पखावज वादक हैं, जिन्होंने पखावज वादन में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई । पं. रामाशीश पाठक का पखावज वादन शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में अत्यधिक सम्मानित है और उन्होंने इस वाद्य को एक नई ऊँचाई पर पहुँचाया है ।

पखावज, जो कि एक प्रमुख शास्त्रीय वाद्य है, खासकर ध्रुपद गायन और नृत्य में प्रयोग होता है । पं. रामाशीश पाठक ने अपने उत्कृष्ट वादन शैली से इस वाद्य को एक विशिष्ट रूप में प्रस्तुत किया । उनके द्वारा पखावज पर दी जाने वाली निपुणता, लयबद्धता और आत्मिक गहराई श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर देती है ।

उनकी वादन शैली में तेज़ी और मृदुता दोनों का सामंजस्य होता है, जो पखावज की पूरी ध्वनि-व्यवस्था को स्पष्ट और प्रभावशाली बनाता है । उनकी विशिष्ट पहचान पखावज के प्रत्येक छेदन और लय के सुंदर संयोजन से जुड़ी हुई है, जो इस वाद्य को और भी समृद्ध और जीवंत बनाता है ।

इस प्रकार, पं. रामाशीश पाठक ने पखावज वादन में अपनी अद्वितीय शैली और पहचान स्थापित की है, और उन्हें भारतीय शास्त्रीय संगीत में एक सम्मानित स्थान प्राप्त है ।

Quick Tip

पखावज वादकों के नाम याद रखें, क्योंकि वे भारतीय शास्त्रीय संगीत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं ।

28. किस ताल में दो विभाग हैं ?

- (a) दीपचंदी
- (b) तीनताल
- (c) रूपक
- (d) कहरवा

Correct Answer : (d) कहरवा

Solution :

स्पष्टीकरण :

कहरवा ताल में कुल 8 मात्राएँ होती हैं, और यह ताल दो विभागों में बँटा होता है, जिससे इसकी लय संरचना सरल और सहज होती है। कहरवा ताल की यह विशेषता इसे संगीत में व्यापक रूप से लोकप्रिय बनाती है।

कहरवा ताल में प्रत्येक विभाग में 4 मात्राएँ होती हैं, और इसकी ताली-खाली की व्यवस्था इस प्रकार होती है: ताली (1), खाली (5), और फिर पुनः ताली (9), आदि। यह सरल लय संरचना संगीतकारों को इसके साथ सहजता से प्रयोग करने का अवसर देती है, विशेषकर ग़ज़ल, भजन, और लोक गीत जैसे शास्त्रीय और आधिकारिक संगीत रूपों में।

कहरवा ताल की सरलता और लयबद्धता इसे शास्त्रीय संगीत और हल्के रचनाओं में आदर्श बनाती है। इसका प्रभाव सीधे तौर पर श्रोता पर पड़ता है, और इसके सामंजस्यपूर्ण प्रवाह से संगीत में संतुलन और स्थिरता बनी रहती है।

इस प्रकार, कहरवा ताल में कुल 8 मात्राएँ होती हैं और यह दो विभागों में बँटा होता है, जो इसकी लय संरचना को सरल और प्रभावी बनाता है।

Quick Tip

ताल की विभाग संख्या ताल की जटिलता और लय को समझने में मदद करती है।

29. सबसे तीव्र लय किसकी है ?

- (a) आलाप
- (b) स्वर-विस्तार
- (c) तान
- (d) बोल-विस्तार

Correct Answer : (c) तान

Solution :

स्पष्टीकरण :

तान सबसे तीव्र लय वाली प्रस्तुति होती है, जिसमें स्वर तीव्र गति से गाए जाते हैं। तान की विशेषता यह है कि इसमें गायन की गति इतनी तेज होती है कि प्रत्येक स्वर जल्दी से जल्दी गाया जाता है, और इसका मुख्य उद्देश्य श्रोता पर एक ऊर्जा और प्रभाव डालना होता है।

तान को शास्त्रीय संगीत में एक उच्चतम स्तर की तकनीकी प्रस्तुति माना जाता है, जिसमें कलाकार अपनी स्वरों की गति, सटीकता और लय पर पूरी महारत दिखाता है। तान की तीव्रता और गति उसे अन्य गायन शैलियों से अलग करती है, और यह संगीत के एक अत्यंत गतिशील रूप के रूप में उभरता है।

तान के दौरान कलाकार विशेष रूप से राग के स्वर और लय का अनुसरण करते हुए, अपनी विधायित्व और संगीत कला का सर्वोत्तम प्रदर्शन करते हैं। यह शास्त्रीय संगीत के प्रदर्शन में एक चुनौतीपूर्ण और कौशलपूर्ण हिस्सा होता है, जिसे सही तरीके से प्रस्तुत करना एक महान क्षमता का प्रतीक होता है।

इस प्रकार, तान एक ऐसी प्रस्तुति होती है जिसमें स्वर तीव्र गति से गाए जाते हैं, और यह संगीत में एक उत्तेजक, उच्च-ऊर्जा वाली अभिव्यक्ति प्रदान करता है।

Quick Tip

संगीत के विभिन्न भागों में लय की तीव्रता को समझना महत्वपूर्ण है। तान सबसे तेज़ लय होती है।

30. किस राग में ऋषभ, गांधार, धैवत और निषाद कोमल हैं ?

- (a) भैरवी
- (b) भैरव
- (c) बिहाग
- (d) काफी

Correct Answer : (a) भैरवी

Solution :

स्पष्टीकरण :

राग भैरवी में ऋषभ, गांधार, धैवत और निषाद कोमल स्वर होते हैं, जो इसे अन्य रागों से भिन्न और अत्यधिक मधुर बनाते हैं। इन कोमल स्वरों का प्रयोग राग भैरवी को एक गहरी, भावनात्मक और संतुलित ध्वनि प्रदान करता है, जो श्रोताओं को एक शांतिपूर्ण और ध्यानमग्न स्थिति में ले जाता है। - ऋषभ (Re), गांधार (Ga), धैवत (Dha) और निषाद (Ni) इन चार स्वरों को कोमल रूप में प्रस्तुत किया जाता है, जो राग के आरोह और अवरोह में अपनी विशेषता के साथ सुनाई देते हैं। - इन कोमल स्वरों के प्रयोग से राग भैरवी को एक विशेष प्रकार की मिठास और नम्रता मिलती है, जो उसे अन्य रागों से अलग बनाती है।

राग भैरवी का गायन आमतौर पर प्रातःकाल में किया जाता है, और इसके स्वर शांति, भक्ति और संतुलन को व्यक्त करते हैं। यह राग मानसिक और आत्मिक शांति का प्रतीक माना जाता है। इस प्रकार, राग भैरवी में ऋषभ, गांधार, धैवत और निषाद कोमल स्वर होते हैं, जो इसे भिन्न और मधुर बनाते हैं, और इसकी एक विशिष्ट पहचान बनाते हैं।

Quick Tip

कोमल स्वरों वाले रागों की पहचान याद रखें। भैरवी राग में ये विशेष स्वर होते हैं।

29. सबसे तीव्र लय किसकी है ?

- (a) आलाप
- (b) स्वर-विस्तार
- (c) तान
- (d) बोल-विस्तार

Correct Answer : (c) तान

Solution :

स्पष्टीकरण :

तान सबसे तीव्र लय वाली प्रस्तुति होती है, जिसमें स्वर तीव्र गति से गाए जाते हैं। तान में स्वर इतनी तेजी से गाए जाते हैं कि सुनने वाले पर इसका एक विशेष प्रभाव पड़ता है। यह शास्त्रीय संगीत की एक विशेष तकनीकी विधि है, जिसमें कलाकार अपनी गति, लय और स्वर के संतुलन को उत्कृष्ट रूप से प्रस्तुत करता है।

तान की तीव्रता और गति उस राग या संगीत के भाव और भावनाओं को और अधिक उभार देती है। इसमें प्रत्येक स्वर को स्पष्टता और सटीकता से गाया जाता है, और इसकी तीव्रता शास्त्रीय संगीत के कलेवर को और अधिक प्रभावी बनाती है।

तान का प्रयोग आमतौर पर रागों में होता है, और यह गायन के दौरान कलाकार की तकनीकी क्षमता और कला का सर्वोत्तम उदाहरण होता है। तान एक उच्च-ऊर्जा वाली प्रस्तुत होती है जो संगीत में एक उत्साह और तेज़ी का अहसास कराती है।

इस प्रकार, तान एक ऐसी प्रस्तुति है जिसमें स्वर तीव्र गति से गाए जाते हैं, और यह शास्त्रीय संगीत में तीव्रता, ऊर्जा और गहरी भावना का संचार करती है।

Quick Tip

संगीत के विभिन्न भागों में लय की तीव्रता को समझना महत्वपूर्ण है। तान सबसे तेज़ लय होती है।

30. किस राग में ऋषभ, गांधार, धैवत और निषाद कोमल हैं ?

- (a) भैरवी
- (b) भैरव
- (c) बिहाग
- (d) काफी

Correct Answer : (a) भैरवी

Solution :

स्पष्टीकरण :

राग भैरवी में ऋषभ, गांधार, धैवत और निषाद कोमल स्वर होते हैं, जो इसे भिन्न और मधुर बनाते हैं। इन कोमल स्वरों का प्रयोग राग भैरवी को एक गहरी, भावनात्मक और संतुलित ध्वनि प्रदान करता है, जो श्रोताओं को एक शांतिपूर्ण और ध्यानमग्न स्थिति में ले जाता है।

- ऋषभ (Re), गांधार (Ga), धैवत (Dha) और निषाद (Ni) ये चार स्वर राग भैरवी में कोमल रूप में होते हैं, जो राग के आरोह और अवरोह में अपनी विशेषता के साथ सुनाई देते हैं। - इन कोमल स्वरों के प्रयोग से राग को एक मिठास और नम्रता मिलती है, जो इसे अन्य रागों से अलग बनाती है। इसके कोमल स्वर इसे एक दृढ़, संयमित, और भावपूर्ण रूप में प्रस्तुत करते हैं।

राग भैरवी का गायन आमतौर पर प्रातःकाल में किया जाता है और इसे ध्यान और भक्ति के रूप में गाया जाता है। इस राग के स्वर शांति, शुद्धता, और आत्मिक सुकून का प्रतीक होते हैं।

इस प्रकार, राग भैरवी में ऋषभ, गांधार, धैवत और निषाद कोमल स्वर होते हैं, जो इसे भिन्न और मधुर बनाते हैं, और इस राग को एक विशिष्ट पहचान प्रदान करते हैं।

Quick Tip

कोमल स्वरों वाले रागों की पहचान याद रखें। भैरवी राग में ये विशेष स्वर होते हैं।

31. नाद के कितने प्रकार हैं ?

- (a) 1
- (b) 2
- (c) 3
- (d) 4

Correct Answer : (d) 4

Solution :

स्पष्टीकरण :

नाद के चार प्रकार होते हैं : अनाहत, बाह्य, स्वयंसिद्ध, और आकाशीय नाद। प्रत्येक प्रकार का नाद विभिन्न स्रोतों और उसकी उत्पत्ति के आधार पर भिन्न होता है, और इनका शास्त्रीय संगीत में विशेष महत्व होता है।

1. अनाहत नाद : यह वह नाद है जो सांसारिक रूप से श्रव्य नहीं होता, लेकिन साधक की आत्मा में उत्पन्न होता है। इसे आध्यात्मिक नाद भी कहा जाता है, जो ध्यान और साधना के दौरान भीतर से सुनाई देता है। यह नाद दिव्य अनुभव और आत्मा के गहरे सम्पर्क को व्यक्त करता है।

2. बाह्य नाद : यह वह नाद है जो बाहरी स्रोतों से उत्पन्न होता है, जैसे वाद्य यंत्र, स्वर, या प्राकृतिक ध्वनियाँ। इसे हम शारीरिक और प्राकृतिक रूप से सुन सकते हैं। जैसे, संगीत यंत्रों का वादन, पक्षियों का गाना, या पत्तों की सरसराहट आदि।

3. स्वयंसिद्ध नाद : यह वह नाद है जो स्वयं उत्पन्न होता है, जैसे किसी व्यक्ति के द्वारा स्वर उत्पन्न करना या किसी वाद्य यंत्र के द्वारा ध्वनि का उत्पादन। यह नाद प्राकृतिक और स्वाभाविक होता है, और इसकी उत्पत्ति किसी बाहरी ऊर्जा से नहीं होती।

4. आकाशीय नाद : यह वह नाद है जो आकाश या ब्रह्माण्ड से उत्पन्न होता है। इसे कुछ लोग प्राकृतिक नाद भी मानते हैं, जो विश्व की चेतना या ब्रह्माण्ड के गहरे तथ्यों से जुड़ा होता है। यह नाद अक्सर ध्यान और साधना में अनुभव किया जाता है और इसे शास्त्रों में दिव्य नाद के रूप में वर्णित किया गया है।

इस प्रकार, नाद के चार प्रकार होते हैं, जिनमें अनाहत, बाह्य, स्वयंसिद्ध, और आकाशीय नाद आते हैं, और प्रत्येक का अपना विशिष्ट महत्व और स्थान है शास्त्रीय संगीत और आध्यात्मिक साधना में।

Quick Tip

नाद के प्रकार समझना संगीत के मूल तत्वों को जानने के लिए आवश्यक है ।

32. अवनद्ध वाद्य कौन-सा है ?

- (a) सितार
- (b) तबला
- (c) इसराज
- (d) शहनाई

Correct Answer : (b) तबला

Solution :

स्पष्टीकरण :

तबला एक अवनद्ध (परकशन) वाद्य है, जिसमें ध्वनि उत्पन्न होती है लेकिन स्वर नहीं । तबला का मुख्य कार्य ताल और लय को निर्धारित करना होता है, और यह संगीत के अन्य तत्वों के साथ तालमेल बनाने में मदद करता है ।

तबला एक प्रकार का ड्रम है, जिसे दोनों हाथों से बजाया जाता है । इसके दोनों पक्ष होते हैं : 1. बायीं ओर का हिस्सा (जिसे "दायाँ" कहते हैं) बड़ा और गहरी ध्वनि उत्पन्न करता है, और 2. दाएँ ओर का हिस्सा (जिसे "बायाँ" कहते हैं) तीव्र और उन्नत ध्वनि उत्पन्न करता है ।

तबला वादन में स्वर नहीं होता क्योंकि यह ताल यंत्र है, और इसका मुख्य उद्देश्य संगीत की लयबद्धता को बनाए रखना और शास्त्रीय संगीत में ताल के विभिन्न पैटर्न को प्रस्तुत करना है । हालांकि, तबला की ध्वनियाँ बहुत ही गूढ़, संगीतमयी, और संवेदनशील होती हैं, जो पूरी संगीत रचना में गहरी आन्तरिकता और स्थिरता प्रदान करती हैं ।

इस प्रकार, तबला एक अवनद्ध (परकशन) वाद्य है, जिसमें ध्वनि उत्पन्न होती है लेकिन स्वर नहीं, और यह संगीत के लय और ताल को सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है ।

Quick Tip

वाद्यों को स्वर और अवनद्ध में बांटना महत्वपूर्ण है । तबला अवनद्ध वाद्य है ।

33. आश्रय राग कौन-सा है ?

- (a) बिहाग
- (b) भूपाली
- (c) कल्याण
- (d) सारंग

Correct Answer : (c) कल्याण

Solution :

स्पष्टीकरण :

कल्याण राग को आश्रय राग भी कहा जाता है क्योंकि यह कई अन्य रागों का आधार होता है। कल्याण राग का संगीत शास्त्र में विशेष महत्व है और यह रागों के परिवार का प्रमुख सदस्य माना जाता है। यह राग विभिन्न उपरागों का जनक है, जो शास्त्रीय संगीत में उनके मौलिक स्वरूप और भावनात्मक अभिव्यक्ति को परिभाषित करते हैं।

कल्याण राग में तीव्र मध्यम (Ma) का प्रयोग होता है, और यह राग अपने शांत, भावनात्मक और गंभीर रूप के लिए प्रसिद्ध है। इसके आरोह (चढ़ाव) और अवरोह (उतराव) में समाहित स्वर सा, रे, गां, मध, प, ध और नी होते हैं। इन स्वर की विशेष संयोजना इसे अत्यधिक निरंतर और संगीतात्मक बनाती है।

इस राग का उपयोग विशेष रूप से रात्रि के समय होता है, और यह संगीत के भावनात्मक और आध्यात्मिक रूप में उत्साह, शांति, और संवेदनशीलता का संतुलन प्रस्तुत करता है।

कल्याण राग की महत्ता इस बात में है कि यह अन्य रागों के संरचनात्मक और भावनात्मक आधार के रूप में कार्य करता है। यह कई अन्य रागों जैसे यमन, बिलावल, दर्शन आदि का स्त्रोत है और इन रागों की मूल भावना और स्वर को परिभाषित करता है।

इस प्रकार, कल्याण राग को आश्रय राग कहा जाता है क्योंकि यह कई रागों का आधार होता है और शास्त्रीय संगीत में इसके द्वारा उत्पन्न होने वाले रागों की पूरी श्रृंखला का प्रभाव श्रोताओं पर पड़ता है।

Quick Tip

रागों के विशेष नाम और उनकी श्रेणी को जानना संगीत की समझ के लिए जरूरी है।

34. जनक राग कौन है ?

- (a) भैरव
- (b) देश

- (c) दुर्गा
(d) खमाज

Correct Answer : (a) भैरव

Solution :

स्पष्टीकरण :

भैरव राग को जनक राग कहा जाता है क्योंकि इससे कई अन्य राग उत्पन्न होते हैं। भैरव राग भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्राचीन और महत्वपूर्ण रागों में से एक है, और इसे रागों के आधार के रूप में माना जाता है। यह राग मुख्य रूप से प्रातःकाल में गाया जाता है और इसकी संगीत रचना गंभीरता, ध्यान और आध्यात्मिकता को व्यक्त करती है।

भैरव राग के आरोह और अवरोह में ऋषभ (Re) और धैवत (Dha) स्वर का प्रयोग कोमल रूप में किया जाता है, जो इसे एक विशिष्ट ध्वनि और भावनात्मक गहराई प्रदान करते हैं। भैरव राग का स्वरूप विशेष रूप से गंभीर और शांत होता है, जो श्रोता को एक ध्यानमग्न और भावुक स्थिति में ले जाता है। कई अन्य राग, जैसे भैरवी, भैरव मल्हार, और शिव राग आदि, भैरव राग से उत्पन्न हुए हैं। भैरव राग का प्रभाव इन रागों पर देखा जा सकता है, जो इसकी ध्वनि संरचना और भावनाओं को अपने संगीत में संचारित करते हैं।

इस प्रकार, भैरव राग को जनक राग कहा जाता है क्योंकि इससे कई अन्य राग उत्पन्न होते हैं, और यह शास्त्रीय संगीत में एक मूल राग के रूप में कार्य करता है, जो कई संगीतकारों के रचनात्मक प्रयासों के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

Quick Tip

रागों के जनक और उनका महत्व जानना संगीत की गहराई को समझने में मदद करता है।

35. स्वरों की कौन-सी जोड़ी अचल है ?

- (a) सा-म
(b) रे-प
(c) ग-नी
(d) सा-प

Correct Answer : (d) सा-प

Solution :**स्पष्टीकरण :**

स्वर "सा" और "पा" अचल स्वर होते हैं, जिनमें बदलाव नहीं होता ।

- "सा" (षड्ज) : यह पहला स्वर है और इसे शास्त्रीय संगीत में स्थिर स्वर माना जाता है । यह हमेशा एक ही स्थिति में रहता है, और इसमें कोई तीव्रता या कोमलता का परिवर्तन नहीं होता । यह स्वर अचल होता है और इसका स्वर परिमाण स्थिर रहता है ।

- "पा" (पंचम) : यह स्वर भी एक स्थिर स्वर होता है, जिसका बदलाव नहीं होता । इसका स्वर हमेशा समान रहता है और इसके स्वर में किसी भी प्रकार का वृद्धि या संकुचन नहीं होता ।

इन दोनों स्वर का अचलता उन्हें संगीत में मूलधारा स्वर के रूप में प्रस्तुत करती है । जब शास्त्रीय संगीत में राग की संरचना की जाती है, तो ये स्वर संगीत की स्थिरता और लयबद्धता बनाए रखते हैं, क्योंकि ये किसी भी प्रकार के स्वर परिवर्तन के बिना संगीत में प्रकट होते हैं ।

इस प्रकार, "सा" और "पा" अचल स्वर होते हैं, जिनमें बदलाव नहीं होता और ये संगीत में स्थिरता और संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं ।

Quick Tip

अचल स्वर वे होते हैं जो कभी भी कोमल या तीव्र नहीं होते, जैसे सा और पा ।

36. ख्याल गायकी से कौन सम्बंधित है ?

- (a) पुण्डरीक विट्ठल
- (b) अभिनव गुप्त
- (c) अदारंग-सदारंग
- (d) महाराणा कुम्भा

Correct Answer : (c) अदारंग-सदारंग

Solution :**स्पष्टीकरण :**

अदारंग और सदारंग ख्याल गायकी के प्रमुख गीतकार और सुधारक माने जाते हैं ।

- अदारंग (अलहुद्दीन खान) और सदारंग (सैयद इस्माइल) ने ख्याल गायकी की संरचना और प्रस्तुति में महत्वपूर्ण योगदान दिया । इन दोनों महान व्यक्तित्वों ने भारतीय संगीत की इस शैली को सुसंगत, व्यवस्थित, और प्रभावी रूप से प्रस्तुत किया ।

- अदारंग ने ख्याल गायकी में एक नवीनता लाने की कोशिश की, जिसमें उन्होंने संगीत के स्वर और राग को नवीन रूप में प्रस्तुत किया। उनकी शैली ने ख्याल गायकी में एक नई दिशा दी और इसे और अधिक भावपूर्ण और संगीतात्मक बनाया।

- सदारंग ने ख्याल गायकी में प्रभावी सुधार किए और उसे सुनने में सरल और प्रचलित बना दिया। उन्होंने तेज गति और भावनात्मक गहराई को ख्याल गायकी में शामिल किया, जिससे यह श्रोताओं के दिलों में अपनी विशेष जगह बना सका।

इन दोनों संगीतज्ञों के योगदान से ख्याल गायकी को एक नया आयाम मिला और इसे भारतीय शास्त्रीय संगीत में एक प्रमुख शैली के रूप में स्थापित किया गया।

इस प्रकार, अदारंग और सदारंग ख्याल गायकी के प्रमुख गीतकार और सुधारक माने जाते हैं, जिनका योगदान भारतीय संगीत में अतुलनीय है।

Quick Tip

ख्याल गायकी के विकास में अदारंग-सदारंग का योगदान महत्वपूर्ण है।

37. आगरा घराने से कौन सम्बंधित है ?

- (a) करीम खाँ
- (b) भीमसेन जोशी
- (c) फ़ैयाज़ खाँ
- (d) जाकिर हुसैन

Correct Answer : (a) करीम खाँ

Solution :

स्पष्टीकरण :

करीम खाँ आगरा घराने के प्रसिद्ध संगीतकार थे, जिन्होंने इस घराने की शैली को विकसित किया।

- करीम खाँ ने आगरा घराने को शास्त्रीय संगीत की संगीतमयी विरासत में एक महत्वपूर्ण स्थान दिलाया। उनके संगीत में गंभीरता, भावनात्मक गहराई, और उत्साही लय का अनोखा मिश्रण था, जिसने इस घराने को पहचान दिलाई।

- आगरा घराना भारतीय शास्त्रीय संगीत में अपनी स्वर तकनीक, तान की प्रस्तुति, और लय की विशेषताओं के लिए प्रसिद्ध है। करीम खाँ के द्वारा की गई संगीत रचनाएँ और गायन की विशिष्ट शैली ने इस घराने को और अधिक प्रतिष्ठित किया।

- करीम खाँ का गायन ख्याल, दूरुपद, और तराना जैसे विभिन्न रूपों में था, और उन्होंने इन शैलियों को अपनी आवाज़ और अभिव्यक्ति के साथ नया रूप दिया। उनके संगीत में गहरे भाव और स्वर नियंत्रण की विशेषता थी, जो उनके गायन की विशिष्टता को दर्शाता था।

करीम खाँ का योगदान आगरा घराने को शास्त्रीय संगीत में एक उच्च स्थान पर स्थापित करने में अहम था। उनके बाद, आगरा घराना आज भी भारतीय शास्त्रीय संगीत में अपनी दृढ़ पहचान बनाए हुए है। इस प्रकार, करीम खाँ आगरा घराने के प्रसिद्ध संगीतकार थे, जिन्होंने इस घराने की शैली को विकसित किया और उसे भारतीय शास्त्रीय संगीत में एक महत्वपूर्ण स्थान दिलाया।

Quick Tip

घरानों के प्रमुख कलाकारों के नाम याद रखना संगीत इतिहास के लिए जरूरी है।

38. 'संगीत रत्नाकर' में कितने अध्याय हैं ?

- (a) 7
- (b) 8
- (c) 9
- (d) 10

Correct Answer : (a) 7

Solution :

स्पष्टीकरण :

'संगीत रत्नाकर' नामक ग्रंथ में कुल 7 अध्याय हैं, जो संगीत के विभिन्न पहलुओं को दर्शाते हैं।

- संगीत रत्नाकर भारतीय संगीत का एक अत्यंत महत्वपूर्ण ग्रंथ है, जिसे शारंगदेव ने रचित किया। यह ग्रंथ शास्त्रीय संगीत के सिद्धांत, राग रचनाओं, ताल की संरचना, और गायन वादन के विभिन्न पहलुओं पर विस्तृत जानकारी प्रदान करता है।

- इस ग्रंथ में संगीत के संगीतशास्त्र, संगीत के प्रकार, रागों का वर्गीकरण, और तालों के प्रकार पर गहन चर्चा की गई है।

- संगीत रत्नाकर के 7 अध्यायों में प्रत्येक अध्याय ने संगीत के अलग-अलग पहलुओं को समझाया है: 1. अधिकार (संगीत के सिद्धांतों की चर्चा) 2. ध्वनि और संगीत का स्वरूप 3. स्वर, राग और तान 4. ताल और उसकी संरचना 5. विधि और प्रक्षिप्तियाँ (गायन और वादन) 6. संगीत का रचनात्मक पहलू 7. संगीत की शिक्षा और परंपरा

- संगीत रत्नाकर भारतीय संगीत की विरासत को संजोने और उसे प्रस्तुत करने का एक अमूल्य ग्रंथ है। यह भारतीय संगीत के अध्ययन में आधिकारिक स्रोत माना जाता है और इसने संगीत के विभिन्न रूपों और संरचनाओं की समझ को और अधिक गहरा किया है।

इस प्रकार, 'संगीत रत्नाकर' नामक ग्रंथ में कुल 7 अध्याय हैं, जो संगीत के विभिन्न पहलुओं को दर्शाते हैं और भारतीय संगीत की गहरी समझ प्रदान करते हैं।

Quick Tip

संगीत की प्रमुख ग्रंथों और उनकी संरचना के बारे में जानकारी रखना उपयोगी होता है।

39. लोक संगीत में निम्न वाद्यों में से किसका प्रयोग होता है ?

- (a) ढोलक
- (b) सरोद
- (c) पियानो
- (d) गिटार

Correct Answer : (a) ढोलक

Solution :

स्पष्टीकरण :

लोक संगीत में ढोलक का प्रमुख प्रयोग होता है क्योंकि यह पारंपरिक और सरल वाद्य है।

- ढोलक एक प्रमुख ताल वाद्य है, जो खासतौर पर भारत और पाकिस्तान के लोक संगीत में अत्यधिक प्रयोग किया जाता है। यह वाद्य मृदंग के छोटे रूप में होता है, जिसे मुख्यतः ताली, खाली, और बोल के साथ बजाया जाता है।

- ढोलक की साधारणता और सुगमता इसे लोक संगीत में व्यापक रूप से उपयोगी बनाती है। इसकी दोहरी ध्वनि और लयबद्ध तरीके से इसे बजाया जाता है, जो विशेष रूप से लोक गीतों, विवाह समारोहों, और अन्य सांस्कृतिक उत्सवों में मनोरंजन का मुख्य हिस्सा बन जाता है।

- ढोलक के वृद्धि और परंपरा के कारण, यह लोक संगीत का अत्यंत महत्वपूर्ण उपकरण बन चुका है। इसका वजन और आकृति भी इसे दूसरे वाद्यों से अलग बनाती है, जिससे इसे विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश में सहजता से उपयोग किया जा सकता है।

- ढोलक का प्रमुख स्थान भारत के विभिन्न क्षेत्रीय संगीत शैलियों में देखने को मिलता है, जैसे कि बंगाली, हरियाणवी, राजस्थानी, पंजाबी, और अन्य लोक संगीत शैलियाँ। ढोलक की ध्वनि लोक गीतों

के साथ पूरी तरह से मेल खाती है और उसमें जो भावनात्मकता होती है, उसे उभारने में सहायक होती है ।

इस प्रकार, लोक संगीत में ढोलक का प्रमुख प्रयोग होता है क्योंकि यह एक पारंपरिक और सरल वाद्य है, जो संगीत में एक अद्वितीय लय और ऊर्जा प्रदान करता है ।

Quick Tip

लोक संगीत में अधिकतर ताल वादन के लिए ढोलक जैसे वाद्यों का उपयोग किया जाता है ।

40. सुषिर वाद्य कौन-सा है ?

- (a) गिटार
- (b) वायलिन
- (c) शहनाई
- (d) सितार

Correct Answer : (c) शहनाई

Solution :

स्पष्टीकरण :

शहनाई एक सुषिर वाद्य है क्योंकि यह हवा के माध्यम से ध्वनि उत्पन्न करता है ।

- शहनाई को भारतीय संगीत में एक प्रमुख सुषिर वाद्य के रूप में माना जाता है, क्योंकि यह एक पवन वाद्य है । इसका ध्वनि उत्पादन हवा के प्रवाह के कारण होता है, जो इसकी लम्बी नलिका में से गुजरते हुए ध्वनि तरंगों को उत्पन्न करता है ।

- शहनाई की ध्वनि विशेष रूप से तेज़ और भव्य होती है, जो इसे विशेष उत्सवों और धार्मिक आयोजनों में एक सजीव और उल्लासपूर्ण वातावरण बनाने में सहायक बनाती है ।

- शहनाई का उपयोग विवाह समारोह, धार्मिक अनुष्ठान, और अन्य सांस्कृतिक उत्सवों में विशेष रूप से होता है, जहाँ इसकी मनमोहक ध्वनि पूरे वातावरण को जीवंत और उत्साहित कर देती है ।

- शहनाई में पानी और हवा के संतुलन द्वारा उत्पन्न होने वाली ध्वनि की विशिष्टता इसे अन्य वाद्यों से अलग बनाती है । शहनाई में नलिका पर अंगुलियों द्वारा दबाव डालने से इसके स्वर और टोन में विभिन्न प्रकार के बदलाव लाए जा सकते हैं, जो इसे एक अत्यधिक संगीतात्मक वाद्य बनाता है ।

इस प्रकार, शहनाई एक सुषिर वाद्य है क्योंकि यह हवा के माध्यम से ध्वनि उत्पन्न करता है, और इसकी विशेष ध्वनि भारतीय संगीत में एक अनमोल स्थान रखती है ।

Quick Tip

वाद्यों को उनके ध्वनि उत्पादन के आधार पर वर्गीकृत करें : सुषिर (हवा), अवनद्ध (तल), और तार (स्ट्रिंग) ।

41. ध्रुवपद में कौन-सा ताल का प्रयोग होता है ?

- (a) रूपक
- (b) दादरा
- (c) चारताल
- (d) तीनताल

Correct Answer : (a) रूपक

Solution :

स्पष्टीकरण :

ध्रुवपद में रूपक ताल का प्रयोग अधिक होता है, जो इसे गंभीर और स्थिर बनाता है ।

- ध्रुवपद भारतीय शास्त्रीय संगीत की पुरानी और पारंपरिक शैली है, जो गंभीरता, ध्यान और आध्यात्मिकता को दर्शाती है । इस शैली में संगीत की प्रस्तुति में बहुत संगति और धैर्य की आवश्यकता होती है, और इसका प्रभाव अधिकतर रूपक ताल की धीरजपूर्ण लय के कारण होता है ।

- रूपक ताल में कुल 6 मात्राएँ होती हैं, जो इसे अन्य तालों की तुलना में थोड़ा अधिक संवेदनशील और स्थिर बनाती हैं । इसकी लय संरचना इसे गहरी भावनात्मक प्रस्तुति और ध्यान में डूबे हुए संगीत के लिए उपयुक्त बनाती है ।

- ध्रुवपद में रूपक ताल के प्रयोग से संगीत में एक गंभीरता और विषय की स्थिरता आती है, जिससे श्रोता संगीत के हर स्वर, तान और विचार में पूरी तरह डूब जाते हैं । यह ताल शैली ध्रुवपद के आध्यात्मिक और साधक पहलुओं को उजागर करने में सहायक होती है ।

- रूपक ताल की धीमी गति और दृढ़ लय इस संगीत शैली में एक विशिष्ट गंभीरता का अहसास कराती है, जो ध्रुवपद के रचनात्मक और संगीतात्मक उद्देश्यों को पूरी तरह से पूरा करता है ।

इस प्रकार, ध्रुवपद में रूपक ताल का प्रयोग अधिक होता है, जो इसे गंभीर और स्थिर बनाता है, और इसके द्वारा गाया गया संगीत पूरी तरह से श्रोता के मन को आकर्षित करता है ।

Quick Tip

ध्रुवपद गायकी में रूपक ताल की भूमिका महत्वपूर्ण होती है ।

42. बिहार का लोक गीत कौन-सा है ?

- (a) रागिणी
- (b) माहिया
- (c) बीहू
- (d) चैता

Correct Answer : (d) चैता

Solution :

स्पष्टीकरण :

चैता बिहार का प्रसिद्ध लोक गीत है, जो वहां की सांस्कृतिक धरोहर का हिस्सा है।

- चैता गीतों की परंपरा मुख्य रूप से बिहार, उत्तर प्रदेश और झारखंड में प्रचलित है। यह गीत विशेष रूप से वसंत ऋतु और होली के मौसम में गाए जाते हैं, और इनके बोल आमतौर पर भगवान और प्रकृति के साथ जुड़ी हुई भावनाओं से संबंधित होते हैं।

- चैता का संगीत और भावनाएँ अक्सर भक्ति, प्राकृतिक सौंदर्य और जीवन के उत्सव से जुड़ी होती हैं। यह लोक गीत साधारण और स्वाभाविक ध्वनियों के माध्यम से गाया जाता है, और इसका उद्देश्य श्रोताओं को एक आध्यात्मिक और सांस्कृतिक अनुभव प्रदान करना होता है।

- चैता गीत मुख्य रूप से वृत्त (मेट्रिकल पैटर्न) में होते हैं, और इसमें गायक का स्वर और बोल दोनों ही मिलकर एक आध्यात्मिक और उत्सवपूर्ण वातावरण बनाते हैं। इन गीतों में अक्सर समूह गायन की परंपरा होती है, जहां समुदाय के लोग मिलकर इसे गाते हैं।

- यह गीत बिहार की सांस्कृतिक धरोहर का हिस्सा है और इसके माध्यम से वहां की परंपराओं और जीवनशैली को संरक्षित किया जाता है। चैता न केवल एक लोक गीत है, बल्कि यह बिहार की लोककला और संस्कृति का जीवंत उदाहरण भी है।

इस प्रकार, चैता बिहार का प्रसिद्ध लोक गीत है, जो वहां की सांस्कृतिक धरोहर का महत्वपूर्ण हिस्सा है, और इस गीत के माध्यम से बिहार की सांस्कृतिक पहचान और परंपराओं को जीवित रखा जाता है।

Quick Tip

प्रत्येक क्षेत्र के लोक गीतों को पहचानना उनकी सांस्कृतिक समझ के लिए आवश्यक है।

43. 'अनाहत नाद' किसे कहते हैं ?

- (a) राग
- (b) ध्वनि
- (c) अव्यक्त ध्वनि
- (d) व्यक्त ध्वनि

Correct Answer : (a) राग

Solution :

स्पष्टीकरण :

अनाहत नाद वह नाद है जो बिना किसी बाहरी कारण के उत्पन्न होता है, इसे राग से जोड़ा जाता है ।

- अनाहत नाद संस्कृत शब्दों से बना है, जिसमें 'अ' का अर्थ है 'नहीं' और 'आहत' का अर्थ है 'घायल' या 'स्पर्श' । इसलिए, अनाहत नाद का शाब्दिक अर्थ है 'वह ध्वनि जो बिना किसी स्पर्श या बाहरी कारण के उत्पन्न होती है' ।

- यह आध्यात्मिक और साधनात्मक ध्वनि है, जिसे आमतौर पर योग और ध्यान के अभ्यासों में सुना जाता है । अनाहत नाद को शरीर के भीतर उत्पन्न होने वाली ध्वनि के रूप में माना जाता है, जो किसी बाहरी वाद्य या ध्वनि उत्पन्न करने वाले स्रोत के बिना, केवल ध्यान और आत्मा की शुद्धता के माध्यम से निकलती है ।

- इस नाद को राग के साथ जोड़ा जाता है क्योंकि राग के माध्यम से इस प्रकार के उच्च, सूक्ष्म और निराकार ध्वनियों की अनुभूति की जाती है । अनाहत नाद को संगीत और ध्यान के अभ्यासों में आध्यात्मिक उन्नति और शांति प्राप्त करने के लिए आवश्यक माना जाता है ।

- अनाहत नाद को संगीत में गहरे भावनात्मक और आध्यात्मिक पहलू के रूप में देखा जाता है, जिसमें श्रोता और गायक दोनों ही इस नाद की ऊर्जा से जुड़ते हैं । यह नाद आत्मिक शांति और संतुलन को प्राप्त करने के मार्ग के रूप में माना जाता है ।

इस प्रकार, अनाहत नाद वह नाद है जो बिना किसी बाहरी कारण के उत्पन्न होता है और इसे राग से जोड़ा जाता है, जो इस ध्वनि को एक आध्यात्मिक और संगीतात्मक अनुभव बना देता है ।

Quick Tip

अनाहत नाद का संबंध आत्मा और संगीत के भीतर की ऊर्जा से होता है ।

44. कौन-सा राग बिलावल थाट का है ?

- (a) बिहाग
- (b) सारंग

- (c) भूपाली
(d) खमाज

Correct Answer : (c) भूपाली

Solution :

स्पष्टीकरण :

भूपाली राग बिलावल थाट का प्रमुख राग है, जो सरल और लोकप्रिय है ।

- भूपाली राग का संबंध बिलावल थाट से है, जो एक मधुर और संगीतात्मक थाट है । इस थाट में रागों का सरल स्वरूप होता है, और यही कारण है कि भूपाली राग को आमतौर पर साधारण और स्वाभाविक माना जाता है ।

- भूपाली राग का ध्वनि स्वरूप सीधा और सहज होता है, जिससे यह श्रोता के दिल को जल्दी छूता है । इसकी आरोह और अवरोह सरल हैं, और इसमें सभी स्वर प्राकृतिक होते हैं, जिससे इसका संगीत सरल, आनंदमय और लोकप्रिय बन जाता है ।

- भूपाली राग में स्वरों का क्रम इस प्रकार होता है : आरोह (सा रे गा मा पा) और अवरोह (पा मा गा रे सा), जो इसकी सरलता और प्राकृतिकता को उजागर करते हैं ।

- इस राग का गायन रात्रि या संध्या काल में किया जाता है, और इसके भाव शांत, सरल और आत्मीय होते हैं । यह राग भावनात्मक शांति और संतुलन की भावना उत्पन्न करता है, जो इसे बहुत लोकप्रिय बनाता है ।

- भूपाली राग का लोकप्रियता का कारण यह भी है कि इसका संगीत आम लोगों तक आसानी से पहुँचता है और इसे समझना और गाना दोनों ही सरल होते हैं ।

इस प्रकार, भूपाली राग बिलावल थाट का प्रमुख राग है, जो सरल और लोकप्रिय है, और इसका संगीत सरलता और मधुरता के कारण श्रोताओं में प्रिय है ।

Quick Tip

रागों को उनके थाट के अनुसार वर्गीकृत करना संगीत अध्ययन का मूल हिस्सा है ।

45. किस राग में गांधार और निषाद कोमल हैं ?

- (a) काफी
(b) खमाज
(c) बिहाग
(d) केदार

Correct Answer : (d) केदार

Solution :

स्पष्टीकरण :

राग केदार में गांधार (ग) और निषाद (नि) स्वर कोमल (मद्धम) होते हैं ।

- राग केदार भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक महत्वपूर्ण राग है, जो आध्यात्मिक और भावनात्मक भावनाओं को व्यक्त करने के लिए प्रसिद्ध है । इसे कैलास और शांतिपूर्ण राग माना जाता है, और इसका गायन विशेष रूप से रात्रि के समय किया जाता है ।

- इस राग के आरोह (चढ़ाव) और अवरोह (उतराव) में गांधार (ग) और निषाद (नि) दोनों ही स्वर कोमल होते हैं । इसका मतलब है कि इन दोनों स्वरों का स्वरूप सामान्य से हल्का और मद्धम होता है, जो राग को एक मुलायम और विशेष प्रभाव प्रदान करता है ।

- कोमल गांधार (ग) और कोमल निषाद (नि) के प्रयोग से राग केदार का स्वर एक मधुर और उदासी का अहसास देता है, जो श्रोता के हृदय को शांति और स्थिरता का अनुभव कराता है । यह राग मानसिक शांति और ध्यान की स्थिति उत्पन्न करता है ।

- राग केदार का स्वर रूप उसकी कोमलता और नम्रता से भरा होता है, और यही कारण है कि इस राग में गांधार और निषाद का कोमल होना इसे अधिक भावनात्मक और आध्यात्मिक बनाता है ।

- राग केदार में इन दोनों कोमल स्वरों के प्रयोग से तंत्र और वेदिक संगीत की दिशा को महसूस किया जा सकता है, जो आध्यात्मिक उन्नति और मनोविकृति से मुक्ति की प्रक्रिया को उजागर करते हैं ।

इस प्रकार, राग केदार में गांधार (ग) और निषाद (नि) स्वर कोमल (मद्धम) होते हैं, जो इसे एक आध्यात्मिक, मुलायम और भावनात्मक राग बनाते हैं ।

Quick Tip

रागों में स्वर के प्रकार (शुद्ध, कोमल, तीव्र) याद रखें, जो उनके भाव और पहचान को निर्धारित करते हैं ।

46. तीवरा ताल में कितनी मात्राएँ होती हैं ?

- (a) सात
- (b) आठ
- (c) नौ
- (d) दस

Correct Answer : (b) आठ

Solution :**स्पष्टीकरण :**

तीवरा ताल में कुल आठ मात्राएँ होती हैं ।

- तीवरा ताल भारतीय शास्त्रीय संगीत की एक महत्वपूर्ण ताल है, जिसे सामान्यतः खयाल गायन और ठुमरी जैसे संगीत रूपों में इस्तेमाल किया जाता है । - इस ताल की संरचना में आठ मात्राएँ होती हैं, जो इसे मध्यम गति के संगीत के लिए उपयुक्त बनाती हैं ।

- तीवरा ताल का संरचना इस प्रकार होता है : - ताली : 1, 3, 5, 7 - खाली : 2, 4, 6, 8 - इसमें ताली की स्थिति पहले, तीसरे, पाँचवें और सातवें स्थान पर होती है, जबकि खाली की स्थिति दूसरे, चौथे, छठे और आठवें स्थान पर होती है ।

- यह ताल लयबद्धता और संतुलन बनाए रखने में मदद करती है, और संगीत में गति और संगति का एहसास दिलाती है ।

- तीवरा ताल का इस्तेमाल विशेष रूप से धीमी और मध्यम गति वाले रचनाओं में किया जाता है, जहाँ लय की सटीकता और ध्वनि के बीच संतुलन की आवश्यकता होती है ।

इस प्रकार, तीवरा ताल में कुल आठ मात्राएँ होती हैं, और इसकी विशेष लय और संरचना इसे भारतीय शास्त्रीय संगीत में महत्वपूर्ण बनाती है ।

Quick Tip

तालों की मात्राओं को याद करना ताल और संगीत की समझ के लिए जरूरी है ।

47. ठुमरी गायकी के साथ कौन-सा ताल बजता है ?

- (a) एकताल
- (b) झपताल
- (c) दीपचन्दी
- (d) सूलताल

Correct Answer : (a) एकताल

Solution :**स्पष्टीकरण :**

ठुमरी गायकी में सामान्यतः एकताल का ताल प्रयोग होता है, जो इसकी मधुरता और लयात्मकता को बढ़ाता है ।

- ठुमरी गायकी भारतीय शास्त्रीय संगीत की एक प्रमुख गायन शैली है, जो रागों और भावनाओं के सरल, मधुर और भावपूर्ण प्रस्तुतिकरण के लिए जानी जाती है। ठुमरी गायन में भावनात्मक अभिव्यक्ति को प्रमुख स्थान दिया जाता है, और इसकी खासियत इसकी लयात्मकता और संगीतात्मक सरलता में होती है।

- एकताल का ताल ठुमरी गायकी में अक्सर प्रयोग किया जाता है क्योंकि यह ताल की संरचना सरल और लयबद्ध होती है, जिससे गायन में मधुरता और प्राकृतिक प्रवाह आता है।

- एकताल में 12 मात्राएँ होती हैं और इसकी संरचना तीन विभागों में बाँटी जाती है, जो इसे गायन के लिए उपयुक्त बनाती हैं। इसमें ताली की स्थिति पहले, पाँचवे, और नौवे स्थान पर होती है, जबकि खाली की स्थिति दूसरे, चौथे, सातवें, और दसवें स्थान पर होती है।

- एकताल की लयबद्धता और मधुरता ठुमरी के भावपूर्ण और भावनात्मक गाने के अनुरूप होती है। इसके साधारण लय और संतुलित संरचना के कारण यह रचनाओं में सूक्ष्मता और स्पष्टता बनाए रखता है, जिससे श्रोता को गायक की भावनाओं से जुड़ने में मदद मिलती है।

इस प्रकार, ठुमरी गायकी में सामान्यतः एकताल का ताल प्रयोग होता है, जो इसकी मधुरता और लयात्मकता को बढ़ाता है और गायन को भावनात्मक रूप से भरपूर बनाता है।

Quick Tip

ठुमरी और अन्य गायकियों के तालों को जानना संगीत अध्ययन का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

48. राग बिहाग में कौन-सा 'निषाद' लगता है ?

- (a) शुद्ध
- (b) कोमल
- (c) (a) तथा (b) दोनों
- (d) इनमें से कोई नहीं

Correct Answer : (b) कोमल

Solution :

स्पष्टीकरण :

राग बिहाग में निषाद कोमल स्वर का प्रयोग होता है, जो इसके विशिष्ट स्वरूप को दर्शाता है।

- राग बिहाग एक प्रमुख राग है, जो भारतीय शास्त्रीय संगीत में विशेष स्थान रखता है। यह राग आमतौर पर रात्रि के समय गाया जाता है और इसका संगीत शांत, भावपूर्ण, और गंभीर होता है।

- राग बिहाग में निषाद कोमल (नि) स्वर का प्रयोग राग की विशिष्टता को और बढ़ाता है । कोमल निषाद का प्रयोग राग को एक विशेष भावनात्मक गहराई और मधुरता प्रदान करता है, जो इसे अन्य रागों से अलग करता है ।

- राग बिहाग में आरोह और अवरोह में निषाद कोमल (नि) के प्रयोग से यह राग एक विस्तृत और भावनात्मक अनुभव उत्पन्न करता है । इस राग का स्वर रूप उसे एक दुःख, विषाद, और संवेदनशीलता की अनुभूति देता है, जो श्रोता को गंभीरता और संदेश से जोड़ता है ।

- राग बिहाग का गायन शास्त्रीय रूप में किया जाता है, और इसके संगीत में ध्यान और भावनात्मक गहराई को महसूस किया जाता है । इसके स्वर कोमल निषाद के कारण राग को विशेष रूप से एक वेदना और संतुलन से भरी भावना मिलती है, जो इसे अत्यंत अर्थपूर्ण और प्रभावशाली बनाती है ।
इस प्रकार, राग बिहाग में निषाद कोमल स्वर का प्रयोग राग के विशिष्ट स्वरूप को दर्शाता है और इसे एक गंभीर, भावनात्मक और मधुर अनुभव प्रदान करता है ।

Quick Tip

राग के स्वर और उनके प्रकार (शुद्ध, कोमल) को समझना आवश्यक है ।

49. कौन-सा राग अपराह्न काल में गाया-बजाया जाता है ?

- (a) भैरव
- (b) अल्हैया बिलावल
- (c) बिहाग
- (d) भीमपलासी

Correct Answer : (b) अल्हैया बिलावल

Solution :

स्पष्टीकरण :

अल्हैया बिलावल राग अपराह्न (दोपहर) काल में गाया-बजाया जाता है ।

- अल्हैया बिलावल राग बिलावल थाट का प्रमुख राग है, जिसे साफ, स्मृतिपूर्वक, और साधारण राग माना जाता है । इस राग का स्वरूप सरल और शुभ है, और यह शांति एवं प्रसन्नता का संचार करता है ।

- राग अल्हैया बिलावल को विशेष रूप से दोपहर के समय गाया जाता है, जिसे अपराह्न काल भी कहते हैं । इस समय वातावरण में ठंडक और हल्का प्रकाश होता है, जो इस राग के स्वरूप को और अधिक प्रभावी बनाता है ।

- राग अल्हैया बिलावल का गायन और वादन नम्रता और प्रसन्नता से भरा होता है, और यह श्रोता को शांति, संतुलन, और मानसिक स्थिरता की अनुभूति कराता है ।

- इस राग के गायन में मूल स्वर जैसे सा, रे, गा, मा, पा, धि, और नि शामिल होते हैं, जो इसे ध्यान और प्रसन्नता का अहसास दिलाते हैं । इस राग के आरोह और अवरोह में सभी स्वर शुद्ध होते हैं, जो इसे और अधिक प्रसन्न और उज्ज्वल बनाते हैं ।

- राग अल्हैया बिलावल की विशेषता है कि इसका संगीत वातावरण में एक दूरदर्शिता, विश्राम, और आत्मिक शांति का संचार करता है, जो इसे दिन के मध्यकाल में गाने के लिए आदर्श बनाता है ।

इस प्रकार, अल्हैया बिलावल राग अपराह्न (दोपहर) काल में गाया-बजाया जाता है, और इसका संगीत उस समय के वातावरण में शांतिपूर्ण और मन को प्रसन्न करने वाला होता है ।

Quick Tip

रागों के गायन काल को याद रखना संगीत के अभ्यास में सहायक होता है ।

50. राग भैरव का वादी स्वर क्या है ?

- (a) सा
- (b) ग
- (c) ध
- (d) रे

Correct Answer : (c) ध

Solution :

स्पष्टीकरण :

राग भैरव का वादी स्वर धैवत (ध) होता है ।

- राग भैरव एक महत्वपूर्ण और आदिक राग है, जो प्रातःकाल के समय गाया जाता है । यह राग अपनी गंभीरता और भक्तिपूर्ण स्वरूप के लिए प्रसिद्ध है, और इसे शास्त्रीय संगीत में विशेष स्थान प्राप्त है ।

- राग भैरव में धैवत (ध) स्वर को वादी स्वर के रूप में चुना गया है, जो राग की विशिष्टता और भावनात्मक गहराई को प्रकट करता है ।

- वादी स्वर वह स्वर होता है जो राग के प्रवृत्त रूप को निर्धारित करता है और जिसका गायन या वादन राग की पूरी भावनात्मक प्रस्तुति में मुख्य भूमिका निभाता है । धैवत (ध) का प्रयोग राग भैरव में इस राग के विशिष्ट प्रभाव और गंभीरता को दर्शाता है ।

- आरोह और अवरोह में धैवत स्वर का विशेष महत्व है, और इसे राग की संरचना में स्थायित्व और संतुलन बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है ।

- राग भैरव का स्वरूप प्रायः गंभीर, भावनात्मक, और सार्वभौमिक होता है, जो श्रोता को एक विशिष्ट भक्ति और शांति का अनुभव कराता है ।

इस प्रकार, राग भैरव का वादी स्वर धैवत (ध) होता है, जो राग के गंभीर और भक्तिपूर्ण स्वरूप को स्पष्ट करता है ।

Quick Tip

रागों के वादी और सम्वादी स्वरों को याद करना आवश्यक है ।

51. राग भूपाली किस थाट का राग है ?

- (a) भैरव
- (b) कल्याण
- (c) खमाज
- (d) तोड़ी

Correct Answer : (c) खमाज

Solution :

स्पष्टीकरण :

राग भूपाली खमाज थाट का प्रसिद्ध राग है, जिसमें शुद्ध स्वर प्रयोग होते हैं ।

- राग भूपाली एक सरल, मधुर और लोकप्रिय राग है, जो आमतौर पर रात्रि के समय गाया जाता है । यह राग अपने शुद्ध और स्वाभाविक स्वर के कारण विशेष रूप से जाना जाता है ।

- राग भूपाली का थाट खमाज है, और इस राग में सभी स्वर शुद्ध होते हैं, जो इसे एक प्राकृतिक और संतुलित स्वरूप प्रदान करते हैं । शुद्ध स्वर के प्रयोग से राग की ध्वनि में एक स्वाभाविक और मनमोहक गूँज उत्पन्न होती है, जो श्रोता को एक प्रकार की शांति और नर्मियत का अहसास कराती है ।

- राग भूपाली के आरोह और अवरोह में सा, रे, ग, मा, पा, ध, नि और सा शुद्ध स्वर होते हैं । इन शुद्ध स्वरों का संयोजन राग को एक सामान्य और सहज अनुभूति देता है, जिससे श्रोता राग में आंतरिक संतुलन और प्राकृतिक प्रवाह का अनुभव करते हैं ।

- राग भूपाली का संगीत सुनने में सरल होता है, लेकिन इसका प्रभाव गहरा और भावपूर्ण होता है । यह राग शांत, प्रसन्न और गंभीर भावनाओं का मिश्रण होता है और इसका गायन या वादन वातावरण में एक मधुरता और शांति की भावना फैलाता है ।

इस प्रकार, राग भूपाली खमाज थाट का प्रसिद्ध राग है, जिसमें शुद्ध स्वर प्रयोग होते हैं, जो इसे सरल, मधुर और प्राकृतिक बनाते हैं ।

Quick Tip

रागों को उनके संबंधित थाट के अनुसार वर्गीकृत करना संगीत की समझ बढ़ाता है ।

52. कहरवा ताल में कितनी मात्राएँ होती हैं ?

- (a) 6
- (b) 7
- (c) 8
- (d) 9

Correct Answer : (c) 8

Solution :

स्पष्टीकरण :

कहरवा ताल में कुल 8 मात्राएँ होती हैं, जो इसे मध्यम गति वाला ताल बनाती हैं ।

- कहरवा ताल एक अत्यंत लोकप्रिय और सहज ताल है, जिसका प्रयोग हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के साथ-साथ लोक संगीत और संगीत रचनाओं में भी किया जाता है ।

- इस ताल की कुल 8 मात्राएँ होती हैं, जिनमें से ताली और खाली के बीच संतुलित लय होती है । इसकी संरचना को निम्नलिखित रूप में समझा जा सकता है :

- ताली 1 (सम) - खाली 5 - ताली 7 - खाली 8

- कहरवा ताल की मध्यम गति इसे स्वाभाविक रूप से लयात्मक और संगीतात्मक बनाती है । यह ताल विशेष रूप से ध्रुपद और खयाल गायकी में लोकप्रिय है और इसके प्रयोग से संगीत में एक सुंदर लय और गतिशीलता आती है ।

- कहरवा ताल की संरचना और लय इसे साधारण से लेकर अधिक जटिल संगीत रचनाओं में भी प्रभावशाली बनाती है । इसकी संगतता और स्मरणशीलता संगीत में प्राकृतिक प्रवाह और भावनात्मक गहराई को जोड़ती है ।

इस प्रकार, कहरवा ताल में कुल 8 मात्राएँ होती हैं, जो इसे मध्यम गति वाला ताल बनाती हैं, और यह संगीत में लयात्मकता और संतुलन प्रदान करता है ।

Quick Tip

ताल की मात्राएँ याद रखना ताल बजाने और समझने में सहायक होता है ।

53. राग यमन का संवादी स्वर क्या है ?

- (a) सा
- (b) ग
- (c) प
- (d) नि

Correct Answer : (b) ग

Solution :

स्पष्टीकरण :

राग यमन में वादी स्वर 'नि' होता है और संवादी स्वर 'ग' होता है ।

- राग यमन कल्याण थाट का प्रमुख राग है, जो आमतौर पर संध्या समय गाया जाता है । यह राग अपनी शांति और मधुरता के लिए प्रसिद्ध है ।

- इस राग में वादी स्वर 'नि' (निषाद) होता है, जो राग का सबसे महत्वपूर्ण स्वर होता है और राग की संपूर्ण संरचना में इसकी मुख्य भूमिका होती है । 'नि' स्वर के प्रयोग से राग में एक भावनात्मक गहराई और शांति का अनुभव होता है ।

- संवादी स्वर 'ग' (गांधार) राग यमन में सहायक स्वर के रूप में काम करता है । यह स्वर राग की संतुलित और स्वाभाविक ध्वनि को स्थापित करने में मदद करता है, और इसे नम्रता और गंभीरता का अहसास कराता है ।

- राग यमन में आरोह और अवरोह दोनों में 'नि' और 'ग' स्वरों का विशेष महत्व है । इन स्वरों का संयोजन राग को एक उच्चतम स्तर की भावनात्मक अभिव्यक्ति और ध्यान की स्थिति प्रदान करता है ।

इस प्रकार, राग यमन में वादी स्वर 'नि' और संवादी स्वर 'ग' होते हैं, जो इस राग के अद्वितीय और शांति प्रदान करने वाले स्वरूप को दर्शाते हैं ।

Quick Tip

रागों के वादी और संवादी स्वरों को याद करना महत्वपूर्ण है ।

54. एक सप्तक के अन्तर्गत कितनी श्रुतियाँ होती हैं ?

- (a) 10
- (b) 12
- (c) 20
- (d) 22

Correct Answer : (b) 12

Solution :

स्पष्टीकरण :

एक सप्तक में कुल 12 श्रुतियाँ होती हैं, जो संगीत के मूल आधार हैं ।

- सप्तक एक संगीत का आधार है, जो संगीत के स्वरों को व्यवस्थित करता है । सप्तक का शाब्दिक अर्थ है "सात", लेकिन इसमें 12 श्रुतियाँ होती हैं, जो स्वरों के छोटे-छोटे विभाजन को दर्शाती हैं ।

- श्रुतियाँ संगीत के सबसे छोटे स्वरात्मक इकाई होती हैं और इन्हें माइक्रो-स्वरों के रूप में देखा जा सकता है । ये श्रुतियाँ स्वरों के बीच के छोटे अंतर को पहचानने में मदद करती हैं, और इन्हें समझना संगीत की गहरी समझ के लिए आवश्यक है ।

- सप्तक में कुल 7 शुद्ध स्वरों (सा, रे, ग, मा, पा, ध, नि) के साथ-साथ अन्य 5 श्रुतियाँ (संगीत में कोमल और तीव्र स्वर) होती हैं, जो संगीत की विविधता और सूक्ष्मता को व्यक्त करती हैं ।

- सप्तक को तीन श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है : मध्यम सप्तक, मंझला सप्तक और तत्स्वरूप सप्तक, जिसमें विभिन्न श्रुतियाँ प्रयोग होती हैं ।

इस प्रकार, एक सप्तक में कुल 12 श्रुतियाँ होती हैं, जो संगीत के मूल आधार हैं और संगीत की गहरी संरचना को स्थापित करती हैं ।

Quick Tip

श्रुतियाँ संगीत के स्वर और उनकी सूक्ष्मताओं को दर्शाती हैं ।

55. बिलावल थाट के 'म' को तीव्र 'म' करने पर कौन-सा थाट बनेगा ?

- (a) कल्याण
- (b) भैरव
- (c) भैरवी
- (d) तोड़ी

Correct Answer : (a) कल्याण

Solution :

स्पष्टीकरण :

बिलावल थाट का मध्यम स्वर (म) यदि तीव्र मध्यम (तीव्र म) में परिवर्तित किया जाए तो कल्याण थाट बनता है ।

- बिलावल थाट एक प्रमुख थाट है, जिसमें शुद्ध स्वर प्रयोग होते हैं । इसका स्वरूप आनंदपूर्ण और सरल होता है, जो इसे आध्यात्मिक और प्राकृतिक बनाता है ।

- इस थाट में मध्यम स्वर (म) का प्रयोग सामान्यतः शुद्ध (म) होता है, जो राग को एक स्थिर और संतुलित ध्वनि देता है ।

- यदि मध्यम स्वर को तीव्र मध्यम (तीव्र म) में परिवर्तित कर दिया जाता है, तो राग का स्वरूप बदलकर कल्याण थाट बन जाता है । तीव्र मध्यम का प्रयोग राग में चमक और तेज़ी जोड़ता है, और इसे कल्याण थाट की पहचान प्रदान करता है ।

- कल्याण थाट में तीव्र मध्यम (तीव्र म) का प्रयोग राग को गंभीर और भावनात्मक रूप से गहरा बना देता है, जो इसे एक अद्वितीय और शांतिपूर्ण राग के रूप में प्रस्तुत करता है ।

इस प्रकार, बिलावल थाट का मध्यम स्वर (म) यदि तीव्र मध्यम (तीव्र म) में परिवर्तित किया जाए तो कल्याण थाट बनता है, जो इसे एक नया और विशिष्ट स्वरूप प्रदान करता है ।

Quick Tip

थाटों के स्वर परिवर्तन से नए थाटों का निर्माण होता है, जो संगीत की विविधता दिखाते हैं ।

56. तीनताल में कितने विभाग होते हैं ?

- (a) 2
- (b) 3
- (c) 4
- (d) 5

Correct Answer : (d) 5

Solution :

स्पष्टीकरण :

तीनताल में कुल 5 विभाग होते हैं, जिनमें ताल की लयात्मक संरचना स्पष्ट होती है ।

- तीनताल एक प्रमुख ताल है, जो शास्त्रीय संगीत में नृत्य और गायन दोनों के लिए व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है। यह ताल अपनी लयात्मक संरचना और सरलता के लिए प्रसिद्ध है।

- इसमें कुल 5 विभाग होते हैं, और प्रत्येक विभाग में प्रथम भाग (ताली) और अंतिम भाग (खाली) होते हैं। इसकी संरचना कुछ इस प्रकार होती है :

- 1 ताली (सम) - 2 ताली - 3 खाली - 4 ताली - 5 खाली (सम)

- तीनताल में ताली और खाली के बीच की लयात्मकता संगीत को भावनात्मक और संगीतात्मक दृष्टि से मजबूत बनाती है। यह ताल मध्यम गति के संगीत में अच्छा असर डालता है और इसे विशेष रूप से खयाल गायकी और नृत्य में प्रयोग किया जाता है।

- इसकी लय और ताल की प्रवृत्तियाँ बहुत स्पष्ट होती हैं, जिससे यह संगीत के स्वाभाविक प्रवाह को बनाए रखती है और इसकी लयात्मकता को बढ़ाती है।

इस प्रकार, तीनताल में कुल 5 विभाग होते हैं, जो ताल की लयात्मक संरचना को स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं।

Quick Tip

ताल के विभागों को समझना ताल की रचना और प्रदर्शन के लिए आवश्यक है।

57. निम्न में कौन उपशास्त्रीय संगीत है ?

- (a) ठुमरी
- (b) ध्रुवपद
- (c) तराना
- (d) लक्षण गीत

Correct Answer : (c) तराना

Solution :

स्पष्टीकरण :

तराना उपशास्त्रीय संगीत की एक शैली है, जो तान और ताल के संयोजन से बनती है।

- तराना एक अत्यंत जिवंत और उत्साही गायन शैली है, जिसमें तान और ताल के माध्यम से संगीत की लय और गति को उजागर किया जाता है। यह शैली विशेष रूप से उपशास्त्रीय संगीत में उपयोग की जाती है और इसमें सुर और लय का विशेष महत्व होता है।

- तान में उच्च-गति से स्वरों का आदान-प्रदान होता है, जो गायन को तेज़ और स्मार्ट बनाता है। इसमें स्वरों का प्रवाह और तान का उडान दोनों महत्वपूर्ण होते हैं।

- ताल का संयोजन तराना को संगीत में लयात्मकता और नृत्यात्मकता प्रदान करता है । यह ताल के क्रम और गति के साथ मेल खाते हुए एक खास प्रकार की संगीतात्मक ऊर्जा का संचार करता है ।

- तराना गायकी में स्वरयोग के साथ-साथ लय और भावनाओं का भी उत्तम संगम होता है, जिससे संगीत का प्रभाव और अभिव्यक्ति और भी मनोहर हो जाती है ।

इस प्रकार, तराना उपशास्त्रीय संगीत की एक शैली है, जो तान और ताल के संयोजन से बनती है और संगीत में लयात्मकता एवं उत्साह को व्यक्त करती है ।

Quick Tip

उपशास्त्रीय संगीत में विभिन्न आधुनिक शैलियाँ शामिल होती हैं ।

58. 'संगीत रत्नाकर' के लेखक कौन हैं ?

- (a) शारंगदेव
- (b) नारद
- (c) भरत
- (d) अहोबल

Correct Answer : (c) भरत

Solution :

स्पष्टीकरण :

'संगीत रत्नाकर' ग्रन्थ के लेखक महर्षि भरत हैं, जिन्होंने भारतीय संगीत की संरचना पर महत्वपूर्ण कार्य किया ।

- महर्षि भरत भारतीय संगीत के प्रसिद्ध ग्रंथकार और संगीतशास्त्र के महान ज्ञाता थे । उनका योगदान भारतीय कला, संगीत और नृत्य के क्षेत्र में अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है ।

- 'संगीत रत्नाकर' महर्षि भरत का प्रमुख काव्य और ग्रंथ है, जिसमें उन्होंने संगीत के विभिन्न पहलुओं पर विस्तृत जानकारी दी है । इस ग्रंथ में ताल, राग, स्वर, संगीत की लय और नृत्य के सिद्धांतों का वर्णन किया गया है ।

- 'संगीत रत्नाकर' को भारतीय संगीत का महान ग्रंथ माना जाता है, जो शास्त्रीय संगीत के विकास में मील का पत्थर साबित हुआ । इस ग्रंथ में महर्षि भरत ने संगीत के नियमों और सिद्धांतों को संकलित किया, जिससे संगीतज्ञों और शोधकर्ताओं को मार्गदर्शन प्राप्त हुआ ।

- इसके अतिरिक्त, महर्षि भरत ने नाट्यशास्त्र पर भी अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया, और उनके कार्य ने भारतीय नृत्य और संगीत के विकास में मूलभूत भूमिका निभाई ।

इस प्रकार, 'संगीत रत्नाकर' ग्रन्थ के लेखक महर्षि भरत हैं, जिन्होंने भारतीय संगीत की संरचना पर महत्वपूर्ण कार्य किया और शास्त्रीय संगीत के अध्ययन में एक आधारभूत ग्रन्थ प्रस्तुत किया।

Quick Tip

भारतीय संगीत के महान ग्रन्थों और उनके लेखकों को जानना जरूरी है।

59. निम्न में किसे 'विलम्बित ख्याल' भी कहा जाता है ?

- (a) मध्य लय
- (b) बड़ा ख्याल
- (c) द्रुत
- (d) छोटा ख्याल

Correct Answer : (a) मध्य लय

Solution :

स्पष्टीकरण :

'विलम्बित ख्याल' को मध्य लय के साथ जोड़ा जाता है क्योंकि यह धीमी गति में प्रस्तुत होता है।

- विलम्बित ख्याल एक प्रकार की ख्याल गायकी है जो धीमी गति में गाई जाती है और इसका मुख्य उद्देश्य संगीत के गंभीर और भावपूर्ण पक्ष को प्रस्तुत करना है।

- इस गायकी में मधुरता, गंभीरता, और भावनाओं की गहराई को दर्शाने के लिए इसे धीमी गति में गाया जाता है। इसकी लय सामान्यतः मध्य लय (Moderate tempo) होती है, जिससे गायन में गहराई और संतुलन आता है।

- मध्य लय में गाने से संगीत की लयात्मकता और स्वरों का विस्तार स्पष्ट रूप से सुनाई देता है, जो कि विलम्बित ख्याल की विशेषता है।

- विलम्बित ख्याल में गायक या गायिका हर स्वर को धीरे-धीरे और संगति से प्रस्तुत करते हैं, जिससे संगीत में भावनाओं का गहरी अभिव्यक्ति होती है।

इस प्रकार, 'विलम्बित ख्याल' को मध्य लय के साथ जोड़ा जाता है क्योंकि यह धीमी गति में प्रस्तुत होता है और इसकी विशेषता है कि यह भावनात्मक अभिव्यक्ति और लयात्मकता को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करता है।

Quick Tip

ख्याल गायकी की गति और प्रकारों को समझना महत्वपूर्ण है ।

60. किस राग में 'रे तथा प' नहीं लगता है ?

- (a) बिहाग
- (b) भूपाली
- (c) मालकौश
- (d) काफी

Correct Answer : (a) बिहाग

Solution :

स्पष्टीकरण :

राग बिहाग में 'रे' तथा 'प' स्वर का प्रयोग नहीं होता है ।

- राग बिहाग भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक प्रमुख और लोकप्रिय राग है, जो आमतौर पर रात्रि के समय गाया जाता है । यह राग गंभीर और भावपूर्ण होता है, जिसमें मधुरता और शांति का अहसास होता है ।

- इस राग में 'रे' (ऋषभ) और 'प' (पंचम) स्वर का प्रयोग नहीं होता, जो इस राग को अन्य रागों से विशिष्ट बनाता है । इस विशेषता के कारण राग बिहाग की रचनात्मकता और स्वर-संरचना अलग होती है ।

- राग बिहाग का आरोह और अवरोह संरचना में 'सा' (शुद्ध) और 'नि' (कोमल निषाद) का प्रमुख स्थान होता है, और इसका स्वरूप अत्यधिक सरल और मधुर होता है ।

- राग बिहाग का भाव मुख्य रूप से उल्लास, आनंद, और विश्राम से जुड़ा होता है । इसमें गायक या वादक संगीत के स्वरों के बीच न्यूनतम बदलाव के साथ इसका प्रदर्शन करते हैं ।

इस प्रकार, राग बिहाग में 'रे' और 'प' स्वर का प्रयोग नहीं होता, जो इसे अन्य रागों से एक अलग पहचान और स्वरात्मक प्रभाव देता है ।

Quick Tip

रागों में प्रयुक्त और वर्जित स्वरों का ज्ञान आवश्यक है ।

61. निम्न में से कौन कर्नाटक संगीत की एक शैली है ?

- (a) झूमर
- (b) गजल
- (c) तिल्लाना
- (d) धमार

Correct Answer : (c) तिल्लाना

Solution :

स्पष्टीकरण :

तिल्लाना कर्नाटक संगीत की एक प्रसिद्ध शैली है, जो तान और ताल पर आधारित होती है ।

- तिल्लाना कर्नाटक संगीत के एक महत्वपूर्ण और आनंदपूर्ण रूप के रूप में जाना जाता है, जिसमें संगीतकार तान (स्वरों की तेज गति) और ताल (लय) के संयोजन से रचनाएँ प्रस्तुत करते हैं ।

- यह शैली मुख्य रूप से ध्रुपद, ख्याल, और धमाल जैसे पारंपरिक संगीत रूपों के बाद आती है और इसका प्रमुख उद्देश्य राग की समाप्ति या समाप्ति के बाद एक मधुर लय में संगीत को समापन तक पहुंचाना होता है ।

- तिल्लाना का ताल आमतौर पर तेज गति का होता है, जिसमें संगीतकार स्वरों की तान और लय को तेजी से प्रस्तुत करते हैं । इसकी मुख्य विशेषता यह है कि इसमें संगीतकार स्वरों का संयोजन, संगीत की लयबद्धता, और उत्साही प्रस्तुति को प्रमुखता से दर्शाते हैं ।

- इस शैली का प्रयोग मुख्य रूप से कर्नाटक संगीत के नृत्य रूपों में भी किया जाता है, जहां यह नृत्य को लयात्मकता और संगीत की गहराई से जोड़ता है ।

इस प्रकार, तिल्लाना कर्नाटक संगीत की एक प्रसिद्ध शैली है, जो तान और ताल के संयोजन पर आधारित होती है और इसमें तेज गति और लयात्मकता की प्रधानता होती है ।

Quick Tip

कर्नाटक संगीत की प्रमुख शैलियों को पहचानना उपयोगी होता है ।

62. तीनताल के किस मात्रा पर दूसरी ताली है ?

- (a) 1
- (b) 5
- (c) 7
- (d) 9

Correct Answer : (c) 7

Solution :

स्पष्टीकरण :

तींताल की दूसरी ताली सातवीं मात्रा पर होती है ।

- तींताल भारतीय शास्त्रीय संगीत में सबसे प्रचलित तालों में से एक है, जिसमें कुल 16 मात्राएँ होती हैं । इसकी विशेषता यह है कि इसमें लय और ताली का सामंजस्य अत्यधिक स्पष्ट होता है । - इस ताल की संरचना 4 विभागों में बाँटी जाती है, जिनमें प्रत्येक विभाग में 4 मात्राएँ होती हैं । - तींताल का प्रमुख तत्व सम (पहली मात्रा) पर ताली होती है और इसके बाद के प्रत्येक ताली की स्थिति दूसरे, चौथे, आठवें, और दसवें स्थान पर होती है । - विशेष रूप से, तींताल की दूसरी ताली सातवीं मात्रा पर पड़ती है, जो ताल की लय को स्थिर और संतुलित बनाए रखती है । - यह ताल विशेष रूप से ख्याल गायन, वाद्य संगीत और नृत्य में प्रयुक्त होता है ।

इस प्रकार, तींताल में दूसरी ताली सातवीं मात्रा पर होती है, जो ताल की गति और लयबद्धता को बनाए रखता है ।

Quick Tip

ताल की ताली और खली की मात्रा को समझना तालबद्धता के लिए जरूरी है ।

63. एक मात्रा में दो मात्रा दिखाना क्या कहलाता है ?

- (a) वाह लय
- (b) दुगुन लय
- (c) तिगुन लय
- (d) चौगुन लय

Correct Answer : (d) चौगुन लय

Solution :

स्पष्टीकरण :

जब एक मात्रा को चार भागों में बाँटा जाता है तो उसे चौगुन लय कहते हैं ।

- चौगुन लय एक विशेष प्रकार की लय है, जिसमें प्रत्येक मात्रा (जो सामान्यतः एक बार की लय को दर्शाती है) को चार भागों में विभाजित किया जाता है । - यह लय विशेष रूप से उस स्थिति में प्रयोग होती है जब संगीत में गति को तीव्र और लयबद्ध तरीके से प्रस्तुत करना होता है । - चौगुन लय का

प्रयोग आमतौर पर तान, तेज गति वाले रचनाओं और उत्साही संगीत में किया जाता है । - इस लय में हर एक मात्रे को चार छोटे भागों में बाँटने से संगीत की रचनाओं में गति और संतुलन उत्पन्न होता है । इस प्रकार, जब एक मात्रा को चार भागों में बाँटा जाता है तो उसे चौगुन लय कहा जाता है, जो संगीत में तीव्रता और लय को व्यक्त करता है ।

Quick Tip

लय के विभिन्न प्रकारों को समझना संगीत में ताल को पकड़ने के लिए जरूरी है ।

64. पं. भीमसेन जोशी का संबंध किस विधा से है ?

- (a) कंठ संगीत
- (b) तबला
- (c) सितार
- (d) पखावज

Correct Answer : (a) कंठ संगीत

Solution :

स्पष्टीकरण :

पं. भीमसेन जोशी कंठ संगीत के प्रसिद्ध गायक थे ।

- पं. भीमसेन जोशी हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के सबसे बड़े और प्रभावशाली गायक थे । उन्होंने विशेष रूप से ख्याल गायकी में अपनी पहचान बनाई । - उनके गायन में रागों का अत्यधिक सूक्ष्म और गहरी अभिव्यक्ति थी, जो श्रोताओं के दिलों में गहरे तक छाप छोड़ती थी । - पं. भीमसेन जोशी ने ध्रुपद, ख्याल, और तिहाई जैसी गायकी शैलियों में अपनी कला का विस्तार किया । - उन्हें उनके संगीत में गहरी भावनाओं, स्वर की शुद्धता और रागों के उच्चतम स्तर पर प्रस्तुति के लिए जाना जाता है । - वे गरवालि, मुम्बई और पुणे जैसी विभिन्न जगहों पर शास्त्रीय संगीत के गुरुओं से प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके थे ।

इस प्रकार, पं. भीमसेन जोशी कंठ संगीत के एक महान और प्रभावशाली गायक थे जिन्होंने भारतीय शास्त्रीय संगीत को वैश्विक मंच पर पहचाना ।

Quick Tip

गायक और वादक की विधा को जानना संगीत के इतिहास को समझने में मदद करता है ।

65. राग खमाज का वादी स्वर कौन-सा है ?

- (a) सा
- (b) ग
- (c) प
- (d) नि

Correct Answer : (b) ग

Solution :

स्पष्टीकरण :

राग खमाज का वादी स्वर 'ग' (गांधार) है, जो इसका मुख्य स्वर माना जाता है ।

- राग खमाज एक प्रमुख राग है जो खमाज थाट पर आधारित होता है । - इसके आरोह (चढ़ाव) और अवरोह (उतराव) में विशेष रूप से गांधार (ग) स्वर का उपयोग किया जाता है, जो इसे एक खास पहचान और रूप प्रदान करता है । - राग खमाज का वादी स्वर ग होने के कारण, इस राग में गांधार का उच्चारण बहुत महत्वपूर्ण होता है । यह स्वर राग की भावनात्मक गहराई और विशेषता को व्यक्त करता है । - राग खमाज को सामान्यतः रात्रि के समय गाया जाता है और यह उत्साह और विवेक का प्रतीक होता है । इस प्रकार, राग खमाज का वादी स्वर गांधार (ग) होता है, जो राग की प्रमुखता और विशेषता को दर्शाता है ।

Quick Tip

राग के वादी स्वर को पहचानना उसकी विशेषता को समझने में सहायक होता है ।

66. अचल स्वर कौन-सा है ?

- (a) प
- (b) ग
- (c) ध
- (d) नि

Correct Answer : (c) ध

Solution :

स्पष्टीकरण :

'ध' (धैवत) स्वर अचल स्वर है, जिसका अर्थ है कि इसे सामान्यतः शुद्ध स्वर माना जाता है और इसमें परिवर्तन नहीं होता ।

- धैवत स्वर भारतीय शास्त्रीय संगीत में एक महत्वपूर्ण स्वर है जो माध्यम सप्तक में स्थित होता है । - यह स्वर स्थिर और बिना बदलाव के होता है, अर्थात् इसका स्वर न बदलने वाला होता है, जिसे अचल स्वर कहा जाता है । - इसके मुकाबले, रिशभ (ऋषभ), गांधार (ग), निषाद (नि) जैसे स्वर कोमल होते हैं, यानी इनमें हल्का परिवर्तन किया जा सकता है । - धैवत स्वर का प्रयोग रागों में विशेष रूप से भावनात्मक और गंभीरता को दर्शाने के लिए किया जाता है ।

इस प्रकार, 'ध' (धैवत) स्वर अचल स्वर है, जो शुद्ध और स्थिर होता है और इसे संगीत में स्थायित्व प्रदान करता है ।

Quick Tip

अचल स्वर वे होते हैं जो सामान्यतः बिना परिवर्तन के प्रयोग होते हैं ।

67. निम्न में से भारत रत्न से विभूषित कौन हैं ?

- (a) पं. रविशंकर
- (b) उस्ताद जाकिर हुसैन
- (c) पं. किशन महाराज
- (d) उस्ताद साबिर खान

Correct Answer : (d) उस्ताद साबिर खान

Solution :

स्पष्टीकरण :

उस्ताद साबिर खान को भारत रत्न पुरस्कार से सम्मानित किया गया है ।

- उस्ताद साबिर खान एक प्रमुख भारतीय संगीतकार और सारंगी वादक थे । - उन्हें उनकी संगीत साधना और भारतीय शास्त्रीय संगीत में उनके योगदान के लिए भारत रत्न पुरस्कार से नवाजा गया, जो भारत का सर्वोच्च नागरिक सम्मान है । - साबिर खान की संगीत में गहरी समझ और रचनात्मकता ने उन्हें भारतीय संगीत के प्रति वैश्विक सम्मान दिलाया । - उन्होंने सारंगी वादन में अपनी विशेष पहचान बनाई और भारतीय शास्त्रीय संगीत की अद्वितीयता को प्रचारित किया ।

इस प्रकार, उस्ताद साबिर खान को उनके अद्वितीय संगीत योगदान के लिए भारत रत्न पुरस्कार से सम्मानित किया गया है ।

Quick Tip

भारत रत्न भारत का सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार है, जो संगीत और अन्य क्षेत्रों में उत्कृष्टता के लिए दिया जाता है।

68. चारताल में कितनी तालियाँ होती हैं ?

- (a) 2
- (b) 3
- (c) 4
- (d) 8

Correct Answer : (d) 8

Solution :

स्पष्टीकरण :

चारताल में कुल 8 तालियाँ होती हैं, जो इसके विभिन्न विभागों को दर्शाती हैं।

- चारताल एक प्रमुख हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की ताल है जिसमें कुल 8 मात्राएँ होती हैं। - यह ताल विशेष रूप से ध्रुपद गायकी और अन्य शास्त्रीय गायन शैलियों में प्रयोग होती है। - चारताल को 8 भागों में विभाजित किया जाता है, और यह ताल अपनी लयात्मक संरचना के लिए प्रसिद्ध है। - प्रत्येक ताली और खाली का एक विशिष्ट स्थान होता है, जो ताल की लयबद्धता और संगीत की गहरी समझ को प्रकट करता है।

इस प्रकार, चारताल में कुल 8 तालियाँ होती हैं, जो इसके विभिन्न विभागों को और उसकी लय संरचना को दर्शाती हैं।

Quick Tip

ताल की ताली और खली की संख्या को ध्यान में रखना आवश्यक है।

69. पं. अनोखेलाल का संबंध किस घराने से है ?

- (a) बनारस
- (b) दिल्ली
- (c) आगरा

(d) पंजाब

Correct Answer : (a) बनारस

Solution :

स्पष्टीकरण :

पं. अनोखेलाल बनारस घराने से संबंधित प्रसिद्ध गायक थे ।

- पं. अनोखेलाल एक प्रमुख हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के गायक थे जिन्होंने खयाल गायकी में अपनी विशेष पहचान बनाई । - वे बनारस घराना के प्रमुख शिष्य और कलाकार थे, जो भारतीय शास्त्रीय संगीत में अपनी विशिष्ट शैली के लिए प्रसिद्ध हैं । - पं. अनोखेलाल का गायन अत्यधिक भावपूर्ण और सशक्त था, और उन्होंने अपनी गायकी से बनारस घराना को समृद्ध किया । - उन्होंने तल, राग और लय की अद्वितीय समझ से गायन को एक नई ऊँचाई पर पहुँचाया ।

इस प्रकार, पं. अनोखेलाल बनारस घराने से संबंधित एक प्रसिद्ध और सम्मानित गायक थे, जिन्होंने भारतीय संगीत के इतिहास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया ।

Quick Tip

भारतीय शास्त्रीय संगीत में घरानों का महत्व और उनका इतिहास जानना आवश्यक है ।

70. शुद्ध और कोमल मिलाकर कुल स्वर कितने होते हैं ?

- (a) 9
- (b) 10
- (c) 11
- (d) 12

Correct Answer : (c) 11

Solution :

स्पष्टीकरण : हिंदी भाषा में स्वरों को दो भागों में बाँटा गया है — शुद्ध स्वर और कोमल स्वर ।

शुद्ध स्वर वे होते हैं जो उच्चारण में स्पष्ट और सामान्य होते हैं । इनकी संख्या कुल 7 होती है :

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ ।

वहीं दूसरी ओर, कोमल स्वर वे होते हैं जिनका उच्चारण अपेक्षाकृत कोमल या मध्यम रूप में किया जाता है । इनकी संख्या 4 है :

ए, ऐ, ओ, औ ।

अतः, कुल मिलाकर हिंदी भाषा में स्वरों की संख्या = 7 (शुद्ध) + 4 (कोमल) = 11 स्वर होते हैं ।

Quick Tip

भारतीय संगीत में स्वर के प्रकार और उनकी संख्या का ज्ञान जरूरी है ।

71. गमक किसे कहते हैं ?

उत्तर : गमक एक प्रकार का अलंकार है जिसका प्रयोग भारतीय शास्त्रीय संगीत में स्वर-सज्जा और भावनात्मक अभिव्यक्ति के लिए किया जाता है ।

गमक में किसी स्वर को तेजी से, बलपूर्वक और लयात्मक ढंग से दोहराया जाता है, जिससे गायन या वादन में तड़क-भड़क, गूंज और प्रभाव उत्पन्न होता है ।

यह अलंकार संगीत को अधिक रचनात्मक, आकर्षक और भावपूर्ण बनाता है ।

गमक का उपयोग विशेष रूप से ध्रुपद, ख्याल, और वीणा, सारंगी, जैसे वाद्ययंत्रों में किया जाता है, जहाँ स्वर की विविधता और सज्जा को महत्व दिया जाता है ।

स्पष्टीकरण : गमक में स्वर की सुरीली और लयबद्ध पुनरावृत्ति होती है, जो संगीत की सुंदरता और भाव को बढ़ाता है ।

Quick Tip

गमक भारतीय शास्त्रीय संगीत में अलंकारों में से एक प्रमुख अलंकार है जो राग की अभिव्यक्ति को प्रभावशाली बनाता है ।

2. ताल दादरा को दुगुन लयकारी में लिखें ।

उत्तर :

दादरा ताल में 6 मात्राएँ होती हैं, दुगुन लयकारी में प्रत्येक मात्रा को दो भागों में बाँटते हैं, अतः कुल 12 भाग होंगे ।

दादरा का मूल ठेका :

११-१११-११-११-११(6 मात्राएँ)

दुगुन लयकारी में :

११ ११ ११ ११ ११ ११

(यहाँ प्रत्येक मात्रा दो बराबर भागों में बाँटी गई है ।)

Quick Tip

दुगुन लयकारी में ताल की प्रत्येक मात्रा को दो भागों में बाँटकर गति दुगुनी कर दी जाती है । यह लय के विस्तार में उपयोगी होता है ।

3. तीनताल का ठेका लिखें ।

उत्तर :

तीनताल एक प्रसिद्ध ताल है जो उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में व्यापक रूप से प्रयोग होती है । इसमें कुल 16 मात्राएँ होती हैं जिन्हें चार-चार मात्राओं के चार विभागों (विभाग = विभाजन) में बाँटा गया है ।

इसका ठेका (ताल की बोल/संरचना) निम्न प्रकार से होता है :

११-११-११ । ११-११-११ । ११-११११-११ । ११-११

प्रत्येक "।" चिह्न एक विभाग के अंत को दर्शाता है ।

तीनताल का पहला मात्रा "धा" होती है, जिसे सम (ताल की शुरुआत) कहा जाता है । इसके अलावा, तीसरे विभाग की पहली मात्रा (नौवीं मात्रा) पर खाली (खाली हाथ) होती है जिसे खाली कहा जाता है ।

तीनताल का उपयोग ताल प्रशिक्षण, तबला वादन, और संगीत प्रस्तुति में मूल ताल के रूप में किया जाता है ।

Quick Tip

तीनताल भारतीय शास्त्रीय संगीत में सबसे प्रमुख और व्यापक रूप से प्रयुक्त ताल है, जिसका ठेका याद रखना आवश्यक है ।

4. आरोह और अवरोह किसे कहते हैं ?

उत्तर :

आरोह और अवरोह किसी भी राग की बुनियादी संरचना को स्पष्ट करने वाले दो मुख्य तत्व होते हैं ।

आरोह वह क्रम है जिसमें राग के स्वरों को नीच (मंद्र सप्तक) से उच्च (तार सप्तक) की ओर क्रमशः चढ़ते हुए प्रस्तुत किया जाता है। इसमें स्वर ऊपर की दिशा में एक के बाद एक बढ़ते हैं।

उदाहरण के लिए : १११, १११, १, १, १, १, ११, १११

अवरोह वह क्रम है जिसमें राग के स्वरों को उच्च से नीच की ओर क्रमशः उतरते हुए प्रस्तुत किया जाता है। इसमें स्वर नीचे की दिशा में एक के बाद एक घटते हैं।

उदाहरण के लिए : ११११, १११, १, १, १, १, ११, ११

आरोह और अवरोह से यह निर्धारित होता है कि राग में कौन-कौन से स्वर किस क्रम में प्रयोग किए जाएंगे।

Quick Tip

राग की पहचान उसके आरोह (चढ़ाव) और अवरोह (उतराव) से होती है, जो राग की संरचना और स्वर गति को दर्शाते हैं।

5. तिहाई को परिभाषित करें।

उत्तर :

तिहाई ताल संगीत की एक विशेष लयबद्ध रचना है जिसमें कोई भी ठेका या भाग तीन बार जल्दी-जल्दी दोहराया जाता है।

इसका उद्देश्य ताल के मुख्य स्थान (सम) पर प्रभावपूर्ण और समयबद्ध समाप्ति करना होता है।

तिहाई ताल का प्रयोग मुख्य रूप से तबले या अन्य ताल वाद्यों में लय की तीव्रता और सजावट बढ़ाने के लिए किया जाता है।

यह लय के संकुचन और विस्तार का एक प्रकार है जो प्रस्तुति को अधिक आकर्षक बनाता है।

Quick Tip

तिहाई तबले या अन्य ताल वाद्यों में लय की सुंदरता और सम को दर्शाने के लिए प्रयोग होती है, जो ताल में रोमांच पैदा करती है।

6. ताल की परिभाषा दें।

उत्तर :

ताल संगीत में समय की माप और लय की प्रणाली है, जिसमें निश्चित मात्रा और समयांतराल में लयबद्ध ध्वनियों का समूह होता है ।

यह प्रणाली संगीत के समन्वय और लयबद्धता को नियंत्रित करती है, जिससे संगीत की रचना और प्रस्तुति में सुसंगति बनी रहती है ।

ताल के माध्यम से संगीतकार अपनी रचनाओं में तालबद्धता और छंद को स्पष्ट रूप से प्रकट करता है, जिससे श्रोताओं को संगीत की लय का अनुभव होता है ।

Quick Tip

ताल संगीत की लय और समयबद्धता को स्थापित करता है और वाद्य व गायन दोनों में समरसता लाने का कार्य करता है ।

7. राग बिहाग के दो आलाप लिखें ।

उत्तर :

राग बिहाग के दो प्रमुख आलाप निम्नलिखित हैं :

1. मध्यमकाली आलाप : इसमें स्वर म, प, नी और सा का प्रयोग करते हुए मधुर और शांत वातावरण बनाया जाता है ।
2. तीव्र आलाप : इसमें तीव्रता और गति के साथ स्वर ग, म, ध, नी का प्रयोग कर राग की भावपूर्णता बढ़ाई जाती है ।

Quick Tip

आलाप राग की स्वर माला का विस्तार होता है, जिसमें स्वर और भाव की गहराई का प्रदर्शन होता है ।

8. राग केदार का परिचय दें ।

उत्तर :

राग केदार एक गंभीर और भव्य राग है जो शाम के समय गाया जाता है । यह राग भैरव थाट का राग है और इसमें शुद्ध और कोमल स्वर दोनों का प्रयोग होता है । केदार राग का आरोह और अवरोह दोनों

बहुत ही शांत और प्रभावी होते हैं। इसके आरोह में सा, रे, ग, म, पा, ध, नि, और सा का प्रयोग होता है। अवरोह में सा, नि, ध, म, ग, रे, सा होते हैं। राग केदार में विशेष रूप से भक्ति भाव और तात्त्विक शांति का भाव व्यक्त होता है।

Quick Tip

राग केदार का प्रभाव भक्ति संगीत में विशेष होता है, और यह राग मानसिक शांति और ध्यान की स्थिति को उत्पन्न करने के लिए आदर्श है।

9. राग देश में 8 मात्राओं की दो तानें लिखें।

उत्तर:

राग देश में कुल 8 मात्राओं की दो प्रमुख तानें होती हैं, जो राग के आरोह और अवरोह को स्पष्ट रूप से दर्शाती हैं। ये तानें राग की विशेषता को उजागर करती हैं और संगीतकारों के द्वारा प्रस्तुति में विशेष स्थान रखती हैं।

1. [?/?-?/?-?/?-?/?-?/?-?/?-?/?]

(पहली तान : आरोह)

यह तान राग देश के आरोह को दर्शाती है, जिसमें स्वरों को क्रमशः नीच से उच्च की ओर चढ़ाया जाता है। आरोह का उद्देश्य स्वरों को एक सकारात्मक दिशा में बढ़ाना होता है। इस तान के द्वारा राग के स्वरों का क्रम सा-रे-गा-मा-पा-धि-नि-सा इस प्रकार होता है।

2. [?/?-?/?-?/?-?/?-?/?-?/?-?/?]

(दूसरी तान : अवरोह)

यह तान राग देश के अवरोह को दर्शाती है, जिसमें स्वरों को उच्च से नीच की ओर घटाया जाता है। अवरोह का उद्देश्य स्वरों को एक निराश या गिरती हुई दिशा में प्रस्तुत करना होता है। इस तान के द्वारा राग के स्वरों का क्रम सा-नि-धि-पा-मा-गा-रे-सा इस प्रकार होता है।

Quick Tip

राग देश में तानें स्वरों के सौंदर्य को व्यक्त करती हैं, और इस राग में 8 मात्राओं में आरोह और अवरोह दोनों का प्रयोग किया जाता है।

10. रजाखानी गत किसे कहते हैं ?

उत्तर :

रजाखानी गत एक विशेष प्रकार की तालबद्ध धारा होती है जो ठुमरी, दादरा, और अन्य शास्त्रीय गायन में उपयोग की जाती है। इसे विशेष रूप से ठुमरी गायकी में प्रयोग किया जाता है, जिसमें त्वरित गति (द्रुत लय) और सुगम ध्वनियों का प्रयोग होता है। रजाखानी गत का उद्देश्य राग के भाव को तीव्रता से व्यक्त करना होता है। यह धीमे से लेकर तेज गति तक हो सकती है, और राग में संप्रेषण की शक्ति को बढ़ाती है।

Quick Tip

रजाखानी गत विशेष रूप से गायक या वादक द्वारा प्रस्तुत किए गए भावों और गति को जल्दी और प्रभावी ढंग से व्यक्त करने का एक तरीका है।

11. वादी स्वर की परिभाषा उदाहरण के साथ लिखें।

उत्तर :

वादी स्वर वह स्वर होता है जो राग में प्रमुख रूप से व्यक्त होता है और राग की मुख्य धारा के रूप में कार्य करता है। यह स्वर राग के भाव और प्रकृति को स्थापित करता है और पूरे राग की पहचान के लिए महत्वपूर्ण होता है। उदाहरण के लिए, राग यमन में ग (गांधार) वादी स्वर है, क्योंकि यह स्वर राग के संपूर्ण भाव और लय को व्यक्त करने में प्रमुख भूमिका निभाता है।

Quick Tip

वादी स्वर राग की पहचान के लिए महत्वपूर्ण होता है, और यह स्वर पूरे राग में प्रमुख स्थान पर होता है।

12. नाद किसे कहते हैं ?

उत्तर :

नाद वह ध्वनि है जो ब्रह्म के अस्तित्व को व्यक्त करती है और इसे संगीत में शुद्ध ध्वनि के रूप में माना जाता है। नाद को दो प्रकार से विभाजित किया जाता है : अव्यक्त नाद और व्यक्त नाद। अव्यक्त नाद वह है जो किसी विशेष रूप से उत्पन्न नहीं होती, जबकि व्यक्त नाद वह होती है जिसे किसी वाद्य या स्वर

से उत्पन्न किया जाता है। नाद की अवधारणा भारतीय संगीत में विशेष रूप से महत्वपूर्ण मानी जाती है, क्योंकि इसे संसार की मूल ध्वनि या ब्रह्म का प्रतिनिधित्व माना जाता है।

Quick Tip

नाद भारतीय संगीत के शास्त्रों और योग में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और इसे ब्रह्म के अस्तित्व के प्रतीक के रूप में देखा जाता है।

13. ताल झपताल का दुगुन लय लिखें।

उत्तर:

ताल झपताल की दुगुन लय में प्रत्येक मात्रा की गति दोगुनी हो जाती है। इसे इस प्रकार लिखा जा सकता है:

११-११-११-११ | ११-११-११-११ | ११-११-११-११ | ११-११-११-११

यह ताल 10 मात्राओं का होता है, और दुगुन लय में इसे 20 मात्राओं में बांटा जाता है।

Quick Tip

झपताल का दुगुन लय ताल की प्रत्येक मात्रा को तीव्रता से प्रस्तुत करता है और इसकी गति को तेज करता है।

14. छोटा ख्याल किसे कहते हैं ?

उत्तर:

छोटा ख्याल शास्त्रीय संगीत में गायन की एक विशेष शैली है जिसमें गायन को तेज गति और संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया जाता है। इसमें मुख्य रूप से तान, बोल, या लयबद्ध स्वर का प्रयोग किया जाता है। यह ख्याल की एक संक्षिप्त और तीव्र प्रस्तुति होती है, जिसे आमतौर पर तात्कालिकता और लय के साथ गाया जाता है। इसका उद्देश्य राग और ताल को जल्दी और प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करना होता है। छोटा ख्याल आमतौर पर गायन में द्रुत गति से होता है और इसमें विशेष रूप से सम, ताली, और खाली का प्रयोग होता है।

Quick Tip

छोटा ख्याल शास्त्रीय संगीत में तीव्रता और ताजगी को व्यक्त करता है, और इसे लघु समय में पूरा किया जाता है।

15. सप्तक को परिभाषित करें।

उत्तर:

सप्तक भारतीय संगीत में एक सप्तक से तात्पर्य है सात स्वरों के समूह से। ये सात स्वर सा, रे, ग, म, पा, ध, नि होते हैं। सप्तक की तीन श्रेणियाँ होती हैं:

1. **मध्यम सप्तक (Middle Octave)** - यह वह सप्तक है जिसमें सामान्यतः गायन और वादन किया जाता है।
2. **मध्यम सप्तक से उच्च सप्तक (Higher Octave)** - यह सप्तक उच्च स्वर में गाया जाता है और इसके स्वरों का प्रयोग उच्चतम ध्वनियों के लिए किया जाता है।
3. **मध्यम सप्तक से नीच सप्तक (Lower Octave)** - यह सप्तक निचले स्वरों में गाया जाता है।

सप्तक संगीत की आवाज़ की सीमाओं को निर्धारित करता है और इसके द्वारा हम स्वरों की उच्चता और नीचता को जान सकते हैं।

Quick Tip

सप्तक के द्वारा भारतीय संगीत में स्वरों का स्तर और रेंज निर्धारित होती है, और यह राग के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

16. राग भैरव का वादी-सम्वादी एवं पकड़ लिखें।

उत्तर:

राग भैरव में वादी स्वर सा (Shuddha Sa) और सम्वादी स्वर ध (Shuddha Dha) होते हैं। यह राग शुद्ध और गंभीर स्वर में गाया जाता है, और इसके आरोह-अवरोह में शुद्ध स्वरों का ही प्रयोग होता है।

पकड़:

राग भैरव की पकड़ विशेष रूप से तान, बोल, या लय के रूप में होती है, और इसे इस प्रकार व्यक्त किया

जा सकता है :

सा-ध-नि-सा, सा-ध-नि-पा-ध, ध-नि-सा-पा-ध

यह राग प्रातःकालीन राग है और इसकी गंभीरता और ठहराव इसे विशेष बनाती है ।

Quick Tip

राग भैरव में शुद्ध स्वर प्रयोग होते हैं, और इसकी पकड़ और तान गहरी और गंभीर होती हैं ।

17. ताल चौताल की दुगुन लय लिखें ।

उत्तर :

ताल चौताल में 12 मात्राएँ होती हैं । इसकी दुगुन लय में प्रत्येक मात्रा की गति दोगुनी हो जाती है, अर्थात् प्रत्येक मात्रा को दो भागों में विभाजित किया जाता है । इसका ठेका इस प्रकार होता है :

ध-धि-धि-धि, ध-धि-धि-धि, ता-ता-नि-मा, ता-ति-न-का

यह ताल विशेष रूप से उत्सव और तेज गति के गायन के लिए उपयुक्त होता है ।

Quick Tip

चौताल की दुगुन लय ताल की गति को तीव्र बनाती है, जिससे संगीत में ऊर्जा और गति का संचार होता है ।

18. वर्जित स्वर और विकृत स्वर किसे कहते हैं ?

उत्तर :

वर्जित स्वर :

वर्जित स्वर वह स्वर होते हैं जिन्हें किसी विशेष राग में प्रयोग करने की अनुमति नहीं होती । ये स्वर राग की भावनाओं और लय में दोष उत्पन्न कर सकते हैं, और इसलिए उन्हें राग में नकारा जाता है । उदाहरण के रूप में, राग भैरव में रे और ग को वर्जित स्वर माना जाता है, जबकि राग यमन में ध और नि को वर्जित स्वर माना जाता है ।

विकृत स्वर :

विकृत स्वर वह स्वर होते हैं जो स्वाभाविक रूप से ठीक नहीं होते, यानी उन्हें सही ढंग से गाया नहीं

जाता । यह स्वर कभी-कभी राग में उनकी आवश्यकता के अनुसार कोमल या तीव्र स्वर से बदले जाते हैं, लेकिन वे आमतौर पर अस्थिर होते हैं । विकृत स्वर का प्रयोग गायक द्वारा राग की भावना को व्यक्त करने के लिए किया जाता है, उदाहरण स्वरूप, राग भैरव में ऋषभ और धैवत को विकृत स्वर में बजाया जा सकता है ।

Quick Tip

वर्जित और विकृत स्वरों का ज्ञान राग की सही प्रस्तुतिकरण में मदद करता है और उसे समृद्ध बनाता है ।

19. प्रातः गेय किन्हीं दो रागों के नाम बताएँ ।

उत्तर :

प्रातः गेय राग वे राग होते हैं जिन्हें प्रातः काल (सुबह) के समय गाने या बजाने का विशेष महत्व होता है । इन रागों की विशेषता है कि इनका प्रभाव शांति, सुख, और ताजगी को व्यक्त करता है ।

दो प्रमुख प्रातः गेय रागों के उदाहरण :

1. राग भैरव - यह राग प्रातःकाल में गाया जाता है और इसमें शुद्ध और गंभीर स्वरों का प्रयोग होता है ।
2. राग यमन - यह भी प्रातः काल का राग है और इसका स्वर गहरे, मधुर और शांतिपूर्ण होते हैं ।

Quick Tip

प्रातः गेय रागों का प्रभाव शांति और मानसिक शुद्धता को बढ़ावा देता है, जिससे दिन की शुरुआत में मानसिक ताजगी मिलती है ।

20. थाट क्या है ? किन्हीं 5 थाटों के नाम लिखें ।

उत्तर :

थाट एक संगीत शास्त्र है, जिसे भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों के वर्गीकरण के लिए उपयोग किया जाता है । यह रागों की एक विस्तृत श्रेणी का आधार है, जो विभिन्न स्वरों और उनके संयोजनों के आधार पर निर्धारित होते हैं । थाट में राग के आरोह (उठान) और अवरोह (वापसी) का स्वरूप निश्चित होता है ।

5 थाटों के नाम :

1. **Bilawal Thaata** - शुद्ध और सीधी पद्धति वाले रागों का थाट ।
2. **Yaman Thaata** - शुद्ध स्वरों वाला एक महत्वपूर्ण राग थाट ।
3. **Bhairav Thaata** - गंभीर और शुद्ध स्वर वाले रागों का थाट ।
4. **Desh Thaata** - प्रादेशिक और ताजगी से भरा राग थाट ।
5. **Marwa Thaata** - विशेष स्वर संयोजन वाले रागों का थाट ।

Quick Tip

थाट भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का आधार है और इसे रागों के भाव और स्वर संयोजन को समझने के लिए एक प्रकार का वर्गीकरण माना जाता है ।

21. पं. भातखण्डे द्वारा दी गई स्वरलिपि पद्धति का वर्णन करें ।

उत्तर :

पं. भातखण्डे ने भारतीय संगीत में स्वरलिपि (notation) को एक संरचित रूप में प्रस्तुत किया, ताकि संगीत के शिक्षण और प्रसार में मदद मिल सके । उनकी स्वरलिपि पद्धति को भातखण्डे की स्वरलिपि पद्धति कहा जाता है, जो मुख्यतः भारतीय शास्त्रीय संगीत की ध्वनियों और स्वरों को अंकित करने के लिए प्रयोग की जाती है ।

स्वरलिपि पद्धति की विशेषताएँ :

- **स्वरों का अंकन** : भातखण्डे ने सात मुख्य स्वरों (सा, रे, ग, म, प, ध, नि) के लिए विशेष प्रतीकों का प्रयोग किया ।
- **ताल का अंकन** : ताल के समय और गति को व्यक्त करने के लिए भातखण्डे ने विशेष संकेतों का उपयोग किया ।
- **उच्चारण की विधि** : भातखण्डे की स्वरलिपि पद्धति ने संगीत के उच्चारण और लय का सही तरीके से पालन सुनिश्चित किया ।
- **संगीत में सरलता** : यह पद्धति संगीत को लिखित रूप में प्रस्तुत करने में आसान और सटीक थी, जो विशेष रूप से गायन और वादन के लिए उपयोगी थी ।

Quick Tip

पं. भातखण्डे की स्वरलिपि पद्धति भारतीय संगीत के शास्त्र और अभ्यास को संरचित करने में मदद करती है, जिससे संगीत को आसानी से सीखा और समझा जा सकता है।

22. तीनताल का पूर्ण परिचय देते हुए उसे ठांह एवं दुगुन लयकारियों में लिखें।

उत्तर:

तीनताल भारतीय शास्त्रीय संगीत में एक प्रसिद्ध ताल है, जो 16 मात्राओं (मात्रा = समय की इकाई) में बंटा होता है। यह ताल बहुत ही सुंदर और लोकप्रिय है और इसे विशेष रूप से ध्रुवपद और ख्याल गायन में प्रयोग किया जाता है। तीनताल का ठेका इस प्रकार होता है:

ढि-ना-ढि-ना-धि-ना-धि-ना-धि-ना-धि-ना-धि-ना-धि-ना

ठांह (दूसरी ताली पर प्रहार):

ढि-ना-ढि-ना-धि-ना-धि-ना-धि-ना-धि-ना-धि-ना-धि-ना-धि

दुगुन लय (तेज गति में):

ढि-ना-ढि-ना-धि-ना-धि-ना-धि-ना-धि-ना-धि-ना-धि-ना-धि-ना

Quick Tip

तीनताल भारतीय शास्त्रीय संगीत में एक प्रमुख ताल है, जिसे गायन और वादन दोनों में समान रूप से प्रयोग किया जाता है। इसे विशेष रूप से लय और गति के अभ्यास के लिए उपयोगी माना जाता है।

23. किसी एक शास्त्रीय संगीतज्ञ का संक्षिप्त जीवनी लिखें।

उत्तर:

पं. भीमसेन जोशी (1922-2011) भारतीय शास्त्रीय संगीत के महान गायक थे। वे ख्याल गायकी शैली के अद्वितीय कलाकार थे और समर्पित जीवन भर रागों के क्षेत्र में रचनात्मकता और स्थिरता का उदाहरण बने रहे। उनका जन्म कर्नाटका राज्य के गडग में हुआ था।

पं. भीमसेन जोशी ने अपनी शिक्षा संगीत के प्रमुख गुरुओं से प्राप्त की, जिनमें पं. नाथ त्रिपाठी और उस्ताद मियाँ अब्दुल करीम खाँ शामिल थे। उनके गायन में भक्ति रस और रागों की गहरी समझ थी। उन्होंने कर्नाटकी और हिन्दुस्तानी संगीत दोनों ही शैलियों में प्रवीणता प्राप्त की और विशेष रूप से राग भैरव, राग यमन और राग मालकौश में अपनी गायकी से अद्भुत प्रदर्शन किया।

पं. भीमसेन जोशी को उनकी कला के लिए अनेक सम्मान प्राप्त हुए, जिसमें भारत रत्न, संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार और पद्मविभूषण जैसे सम्मान शामिल हैं। वे भारतीय शास्त्रीय संगीत के सबसे प्रभावशाली और प्रेरणादायक गायकों में से एक माने जाते हैं।

Quick Tip

पं. भीमसेन जोशी का योगदान भारतीय शास्त्रीय संगीत में अभूतपूर्व है। उनके गायन के माध्यम से उन्होंने हिन्दुस्तानी संगीत को नया आयाम दिया और उसे वैश्विक स्तर पर प्रसिद्ध किया।

24. अपने पाठ्यक्रम में दिए गए किसी राग में छोटा ख्याल की आठ मात्राओं की दो तानों सहित स्वरलिपि में लिखें।

उत्तर:

मान लीजिए हम राग यमन में छोटा ख्याल लिख रहे हैं। राग यमन का गायन रात्रि के दूसरे प्रहर में किया जाता है और इसमें शुद्ध माध्यम और तीव्र गंधार का प्रयोग होता है।

राग यमन में छोटा ख्याल (आठ मात्राओं में):

आरोह : सा रे ग म प ध नी सा'

अवरोह : सा' नी ध प म ग रे सा

ताल : तीनताल (ठांह लय में)

तान 1:

सा रे ग म । प ध नी सा । सा' नी ध प । म ग रे सा

तान 2:

सा रे ग म । प ध नी सा । सा' नी ध प । म ग रे सा

Quick Tip

छोटे ख्याल में राग का संक्षिप्त एवं सहज रूप होता है। इसे छोटे या मध्यम लय में गाया जाता है और इसमें मुख्य रूप से राग का आरोह-अवरोह और उसके प्रमुख स्वर होते हैं।

25. संगीत में वर्ण किसे कहते हैं ? इसके प्रकारों के बारे में सविस्तार लिखें।

उत्तर :

वर्ण (Svara) संगीत में वह ध्वनि होती है, जो किसी विशेष आवृत्ति (frequency) पर उत्पन्न होती है। भारतीय संगीत में वर्ण का अर्थ केवल स्वर से नहीं, बल्कि संगीत के किसी भी स्वर की ध्वनि की अनुगूँज से भी है। वर्ण का प्रयोग रागों में होता है और यह राग के भाव और रंग को व्यक्त करने में मदद करता है।

वर्ण के प्रकार : 1. शुद्ध वर्ण : - यह वे स्वर होते हैं, जो एक निश्चित स्वरूप में होते हैं, जैसे सा, रे, ग, म, प, ध, नी। इन स्वरों का प्रयोग राग में सामान्य रूप से होता है।

2. कोमल वर्ण : - वे स्वर जो शुद्ध स्वर से थोड़े नीचे होते हैं, जैसे रे और ध के कोमल रूप। ये स्वर राग में भावनाओं और स्वरूप में परिवर्तन का संकेत देते हैं।

3. तीव्र वर्ण : - वे स्वर जो शुद्ध स्वर से थोड़े ऊपर होते हैं, जैसे ग और म के तीव्र रूप। इन स्वरों का प्रयोग राग में विशेष उत्साह और ऊर्जा पैदा करने के लिए किया जाता है।

4. विकृत वर्ण : - यह वे स्वर होते हैं, जो शुद्ध और कोमल स्वर के बीच होते हैं और किसी विशेष राग में प्रयोग होते हैं। विकृत स्वर का प्रयोग रागों को एक विशेष रंग और भाव देने के लिए किया जाता है।

वर्ण का महत्व : वर्ण संगीत में राग के स्वरूप को सटीक रूप से व्यक्त करने के लिए महत्वपूर्ण होते हैं। प्रत्येक राग में विशिष्ट वर्णों का चयन किया जाता है, जो उस राग के स्वर और भावनाओं को व्यक्त करते हैं।

Quick Tip

वर्णों का चयन और उनका प्रयोग राग की सटीकता और भावनात्मक प्रभाव को बनाए रखने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। शुद्ध, कोमल और तीव्र स्वरों के सामंजस्य से ही राग में भावनाओं की गहरी अभिव्यक्ति होती है।

26. लोक संगीत से आप क्या समझते हैं ? सोदाहरण बताएँ।

उत्तर :

लोक संगीत (Folk Music) वह संगीत होता है, जो किसी विशेष समुदाय, क्षेत्र या संस्कृति से उत्पन्न होता है। यह संगीत आमतौर पर पीढ़ी दर पीढ़ी श्रवण और प्रदर्शन के माध्यम से संचारित होता है और इसमें लोक जीवन, परंपराएँ, संस्कृतियाँ, और समाज की भावनाएँ और विश्वास व्यक्त होते हैं। लोक संगीत में किसी विशेष कला का शास्त्रीय रूप नहीं होता, बल्कि यह एक साधारण और स्वाभाविक रूप में होता है, जिसे आम लोग गाते हैं और बजाते हैं।

लोक संगीत का प्रयोग आमतौर पर सामूहिक कार्यों, धार्मिक अनुष्ठानों, पर्वों, उत्सवों और सामाजिक जीवन के विभिन्न पहलुओं को व्यक्त करने के लिए किया जाता है। इसके गीतों और ध्वनियों में स्थानीय बोली, भाषा और सांस्कृतिक दृष्टिकोण की छाप होती है।

लोक संगीत के उदाहरण : 1. भारत के बिहू गीत : - यह असम राज्य के प्रमुख लोक गीतों में से एक है। बिहू गीतों में असमिया जीवन, कृषि कार्य, प्रेम और सामाजिक रिश्तों के बारे में गाया जाता है। यह गीत खासकर बिहू उत्सव के दौरान गाए जाते हैं और मुख्यतः ताऊल (संगीत वाद्य) और ढोल (ताल वाद्य) के साथ बजाए जाते हैं।

2. पंजाबी भांगड़ा : - भांगड़ा पंजाब का एक प्रसिद्ध लोक नृत्य है, जिसे विशेष रूप से खेतों के कार्यों के दौरान और त्योहारों पर गाया जाता है। इसमें ढोलक और ताशा का प्रमुख योगदान होता है।

3. राजस्थानी मांड गीत : - राजस्थान के मांड लोक गीतों में राजस्थानी संस्कृति, वीरता, प्रेम और सामाजिक परंपराओं की झलक मिलती है। ये गीत खासकर विवाह, लोक उत्सवों और सामाजिक कार्यों में गाए जाते हैं।

Quick Tip

लोक संगीत का उद्देश्य न केवल मनोरंजन होता है, बल्कि यह एक सामाजिक और सांस्कृतिक कड़ी भी है, जो समुदाय के इतिहास, परंपराओं और भावनाओं को संजोता है।